

अध्याय – 1

राज्य सरकार के वित्त

अध्याय- 1

राज्य सरकार के वित्त

यह अध्याय वित्तीय वर्ष 2012-13 के दौरान राजकोषीय समग्रों की विगत प्रवृत्तियों और इसकी संगठनात्मक रूपरेखा के मानदंडों के द्वारा राज्य सरकार के वित्त का विहंगावलोकन प्रस्तुत करता है। परिशिष्ट-1.1 राज्य सरकार के वित्त लेखे, जिस पर यह प्रतिवेदन आधारित है, के संरचना और खाके को प्रस्तुत करता है। परिशिष्ट-1.2 राज्य की राजकोषीय स्थिति के निर्धारणार्थ अपनाई गई कार्यपद्धति की रूपरेखा संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

1.1 उत्तराखण्ड की रूपरेखा

उत्तराखण्ड, भारत सरकार द्वारा राज्यों के संवर्गीकरण पर आधारित विशेष श्रेणी राज्य (एस सी एस) है। उत्तराखण्ड को प्राप्त विशेषाधिकारों में भारत सरकार (भा स) द्वारा प्राप्त वित्तीय सहायता भी सम्मिलित है जिसका 90 प्रतिशत अंश अनुदान एवं 10 प्रतिशत ऋण का अनुपात होता है जो अविशेष श्रेणी राज्यों से भिन्न है जिन्हें केन्द्रीय सहायता 30 प्रतिशत अनुदान एवं 70 प्रतिशत ऋण के रूप में प्राप्त होती है।

राज्य में बीते दशक में उल्लेखनीय आर्थिक वृद्धि हुयी तथा वर्ष 2003-04 से 2012-13 तक की अवधि के लिए इसके सकल राज्य घरेलू उत्पाद¹ (स रा घ उ) में प्रचलित दरों पर मिश्रित वार्षिक विकास दर 19.80 प्रतिशत रही।

सामाजिक संकेतक यथा साक्षरता दर और जन्म पर शिशु मृत्यु दर ने दर्शाया कि राज्य में अखिल भारतीय औसत से बेहतर साक्षर और कम मृत्यु दर है। राज्य में बी पी एल जनसंख्या अखिल भारतीय औसत से काफी कम थी (परिशिष्ट- 1)।

सकल राज्य घरेलू उत्पाद (स रा घ उ)

स रा घ उ एक निर्धारित समय में राज्य में सरकारी आधार पर मान्यता प्राप्त उत्पादित सामग्रियों और सेवाओं का बाजार मूल्य है। राज्य के स रा घ उ की वृद्धि राज्य की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण संकेतक है क्योंकि यह राज्य की जनसंख्या के जीवन निर्वाह स्तर को दर्शाता है। भारत के स रा घ उ की वार्षिक वृद्धि का प्रचलित दरों पर रुख नीचे प्रदर्शित है:

प्रचलित दरों पर स रा घ उ और स रा घ उ की वार्षिक वृद्धि दर

वर्ष	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12 (त्व. आ.)*	2012-13 (अ. आ.)*
भारत का स रा घ उ (₹ करोड़ में)	53,03,566	61,08,903	72,66,967	83,53,495	94,61,013
स रा घ उ की वृद्धि दर (प्रतिशतता)	15.76	15.18	18.96	14.95	13.26
राज्य का स रा घ उ (₹ करोड़ में)	56,025	70,730	83,966	94,159	1,08,343
स रा घ उ की विकास दर (प्रतिशतता)	22.18	26.25	18.71	12.14	15.06

श्रोत : निदेशक, अर्थ एवं संख्या, उत्तराखंड

* त्व. आ. - त्वरित आगणन और अ.आ. - अग्रिम आगणन

¹ परिशिष्ट-4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

स रा घ उ की वृद्धि दर स घ उ की तुलना में 2008-09 से 2012-13 में परिवर्तनशील रही। स रा घ उ की वृद्धि दर 2008-09 और 2009-10 में स घ उ की तुलना में अधिक थी। यह वर्ष 2010-11 में लगभग समरूप थी। 2011-12 में यह कम लेकिन 2012-13 में उच्चतर दिशा में रही।

राज्य सरकार के मुख्य राजकोषीय समग्रों में मुख्य परिवर्तन, वर्ष 2009-10 के राजस्व आधिक्य का राजस्व घाटे में परिवर्तित हो जाना था, जो वर्ष 2010-11 में लगभग शून्य (₹ 13 करोड़) हो गया और अंततः वर्ष 2011-12 में राजस्व आधिक्य (₹ 716 करोड़) में परिवर्तित हो गया जो चालू वर्ष में और बढ़कर ₹ 1,787 करोड़ पर पहुँच गया। चालू वर्ष में, राजकोषीय घाटा ₹ 1,600 करोड़ पर, स रा घ उ के लगभग 1.48 प्रतिशत के आस-पास टिका रहा, तेरहवें वित्त आयोग (ते वि आ) द्वारा निर्धारित मानक 3.50 प्रतिशत से काफी नीचे है। राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजटीय प्रबन्धन (एफ आर बी एम) अधिनियम, 2005 (ते वि आ की सिफारिश पर मार्च 2011 में संशोधित) और राज्य की मध्यावधि राजकोषीय नीति (एम टी एफ पी) द्वारा, राज्य के स्वयं के राजकोषीय सुधार पथ (एफ सी पी) का सारांश परिशिष्ट 1.2 (भाग ब) में दिया गया है।

1.1.1 चालू वर्ष के राजकोषीय लेनदेन का सार

तालिका-1.1, गत वर्ष (2011-12) के सापेक्ष चालू वर्ष (2012-13) के दौरान राज्य सरकार के राजकोषीय लेनदेन का सार प्रस्तुत करती है जबकि परिशिष्ट-1.4 गत वर्ष की तुलना में चालू वर्ष के दौरान समग्र राजकोषीय स्थिति के साथ-साथ प्राप्ति एवं संवितरणों के विवरण उपलब्ध कराता है।

तालिका-1.1
चालू वित्तीय वर्ष के राजकोषीय संचालनों का सारांश (₹ करोड़ में)

प्राप्तियाँ	2011-12	2012-13	संवितरण	2011-12	2012-13		
					आयोजनेतर	आयोजनागत	कुल
भाग-अ: राजस्व							
कर राजस्व	5,615.62	6,414.24	सामान्य सेवाएँ	4,475.11	5,368.13	4.10	5,372.23
करेतर राजस्व	1,136.13	1,602.88	सामाजिक सेवाएँ	6,019.65	4,146.27	1,949.57	6,095.84
संघीय करों/शुल्कों का अंश	2,866.04	3,272.88	आर्थिक सेवाएँ	2,101.63	1,522.10	473.19	1,995.29
भारत सरकार से अनुदान	4,073.45	4,457.22	सहायता अनुदान और अंशदान	378.80	496.86	--	496.86
राजस्व प्राप्तियाँ	13,691.24	15,747.22	राजस्व व्यय	12,975.19	11,533.36	2,426.86	13,960.22
भाग -ब: पूँजीगत और अन्य							
विविध पूँजीगत प्राप्तियाँ	-	-	पूँजीगत परिव्यय	2,316.94	570.41	2,971.68	3,542.09
ऋणों एवं अग्रिमों की वसूलियाँ	90.65	428.44	संवितरित ऋण एवं अग्रिम	246.83	--	-	272.57
लोक ऋण प्राप्तियाँ*	2,335.52	2,967.43	लोक ऋणों की चुकौतियाँ*	1,015.79	--	--	1,472.21
--	--	--	आकस्मिकता निधि को विनियोग	(-)400.00	--	--	
आकस्मिकता निधि	126.13	32.22	आकस्मिकता निधि	69.07	--	--	32.07
लोक लेखा प्राप्तियाँ	19,668.05	21,925.45	लोक लेखा संवितरण	19,832.00	--	--	20,961.24
प्रारम्भिक रोकड़ शेष	1,229.41	1085.18	अंतिम रोकड़ शेष	1,085.18	--	--	1,945.54
योग	37,141.00	42,185.94	योग	37,141.00	--	--	42,185.94

* इसमें अर्थोपाय अग्रिम और ओवरड्राफ्ट के अधीन निवल लेनदेन शामिल नहीं हैं।

पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2012-13 के दौरान महत्वपूर्ण परिवर्तन निम्नानुसार है:

- राजस्व प्राप्ति में गत वर्ष के सापेक्ष ₹ 2,056 करोड़ (15.02 प्रतिशत) की वृद्धि हुई। यह वृद्धि मुख्यतः राज्य के अपने कर राजस्व (₹ 799 करोड़), करेतर राजस्व (₹ 467 करोड़), संघ के करों / शुल्कों में राज्य के अंश (₹ 407 करोड़) और भारत सरकार से प्राप्त अनुदानों (₹ 384 करोड़) में बढ़ोतरी के कारण थी।
- पिछले साल के सापेक्ष इस वर्ष के दौरान राजस्व व्यय में ₹ 985 करोड़ (7.59 प्रतिशत) की वृद्धि हुई, जैसा कि अनुवर्ती प्रस्तर-1.6.1 में वर्णित है।
- पिछले साल के सापेक्ष इस वर्ष के दौरान पूँजीगत व्यय में गत वर्ष से ₹ 1,225 करोड़ (52.88 प्रतिशत) की वृद्धि हुई जैसा कि अनुवर्ती प्रस्तर 1.6.1 में वर्णित है।
- ऋण एवं अग्रिमों की वसूली ₹ 91 करोड़ (2011-12) से बढ़कर ₹ 428 करोड़ (370 प्रतिशत) हो गयी। यह मुख्य रूप से ऊर्जा क्षेत्र में पुनर्अदायगी (₹ 422 करोड़) के कारण था। वर्ष के दौरान ऋण एवं अग्रिमों के संवितरण ₹ 26 करोड़ बढ़े (₹ 247 करोड़ से ₹ 273 करोड़)। वर्ष 2012-13 के दौरान मुख्य प्राप्तिकर्ता कृषि एवं सम्बद्ध क्रियाकलाप (₹ 159 करोड़) और ऊर्जा खण्ड (₹ 84 करोड़) थे।
- वर्ष 2012-13 के दौरान राज्य सरकार के आन्तरिक ऋण में वृद्धि (₹ 644 करोड़) के कारण केन्द्र सरकार से लोक ऋण प्राप्ति में ₹ 632 करोड़ की वृद्धि दर्ज हुई। तथापि, केन्द्र सरकार से ऋणों एवं अग्रिमों की प्राप्ति में गिरावट थी (₹ 12 करोड़)।
- उच्च एवं विविध (₹ 2,644 करोड़), प्रेषण (₹ 67 करोड़) एवं जमाओं और अग्रिमों (₹ 29 करोड़) में वृद्धि के कारण लोक लेखा प्राप्ति ₹ 2,257 करोड़ से बढ़ गई। यह आंशिक रूप से आरक्षित निधियों (₹ 369 करोड़) और लघु बचतों, भविष्य निधियों इत्यादि में कमी (₹ 113 करोड़) से प्रतिसंतुलित हुयी। लोक लेखा संवितरण भी उच्च एवं विविध (₹ 1,752 करोड़) और लघु बचतों एवं भविष्य निधियों इत्यादि (₹ 242 करोड़) में वृद्धि जो आंशिक रूप से आरक्षित निधियों (₹ 410 करोड़), प्रेषण (₹ 297 करोड़) और जमाओं एवं अग्रिमों (₹ 157 करोड़) में कमी के कारण प्रतिसंतुलित हुई, के कारण ₹ 1,129 करोड़ से बढ़ गया (परिशिष्ट 1.4)।
- वर्ष 2011-12 के अन्तिम अवशेष की तुलना में वर्ष के अन्त में राज्य का रोकड़ शेष ₹ 860 करोड़ बढ़ गया।

वर्ष 2010-11 में राजस्व घाटे को लगभग शून्य (₹ 13 करोड़) तक नीचे लाने के पश्चात सरकार वर्ष 2011-12 के दौरान ₹ 716 करोड़ का राजस्व आधिक्य प्राप्त करने में सफल हुई। चालू वर्ष 2012-13 में राजस्व आधिक्य ने पुनः 1,071 करोड़ की वृद्धि दर्शाई और ₹ 1,787 करोड़ पर रहा जो कि मुख्यतः राज्य की स्वयं की राजस्व प्राप्ति में वृद्धि (₹ 1,265 करोड़) के कारण था। राजकोषीय घाटा, जो वर्ष 2011-12 में ₹ 1,757 करोड़ था, घटकर ₹ 1,600 करोड़ (स रा घ उ का 1.48 प्रतिशत) तक नीचे आ गया, जिससे राज्य की राजकोषीय दशा में और सुधार हुआ।

1.1.2 राजकोषीय स्थिति की समीक्षा

बजट में प्रावधानित मुख्य राजकोषीय चर जो कि 13वें वित्त आयोग की संस्तुतियों और राज्य के एफ आर बी एम अधिनियम में लक्षित थे तालिका 1.2 में दिए गये हैं:

तालिका - 1.2

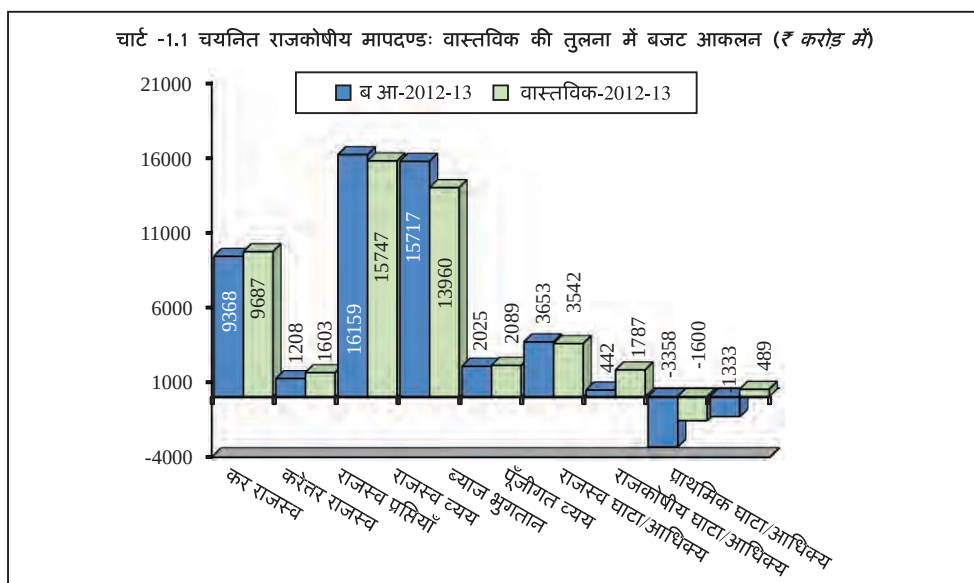
राजकोषीय चर	2012-13						
	एफ आर बी एम अधिनियम में निर्धारित लक्ष्य	बजट में प्रस्तावित लक्ष्य	एम टी एफ पी में प्रक्षेपण	वास्तविक	वास्तविक के विरुद्ध प्रतिशत भिन्नता		
					एफ आर बी एम अधिनियम का लक्ष्य	बजट के लक्ष्य	एम टी एफ पी प्रक्षेपण
राजस्व घाटा (-) /आधिक्य (+) (₹ करोड़ में)	मार्च 2015 तक शून्य तक नीचे लाना	(+) 442	(+)1226	(+) 1787	प्राप्त किया	(+) 304	(+) 46
राजकोषीय घाटा/स रा घ उ (प्रतिशत में)	3.50	3.12	3.09	1.48	58	53	52
सरकार के कुल बकाया ऋण का स रा घ उ से अनुपात (प्रतिशत में)	40.00	23.27	23.19	23.57	41	1.29	1.64

उत्तराखण्ड में, एफ आर बी एम अधिनियम अक्टूबर 2005 में अधिनियमित हुआ तथा राज्य सरकार को राजकोषीय सुधार और सुदृढीकरण हेतु कदम उठाने हेतु मार्ग प्रशस्त हो गया। तत्पश्चात्, प्रथम राजकोषीय सुधार पथ (रा सु प) मध्यकालिक राजकोषीय नीति विवरण के रूप में वर्ष 2004-05 में वार्षिक बजट के साथ राज्य विधायिका में प्रस्तुत किया गया।

राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबन्धन अधिनियम, 2005 पारित होने के समय से राज्य सरकार राजकोषीय सुदृढीकरण की ओर अग्रसर है। राज्य सरकार, वर्ष 2009-10 को छोड़कर राजस्व आधिक्य बनाये रखने में वर्षवार सफल रहा। राज्य का राजकोषीय घाटा भी XII और XIII वित्त आयोगों द्वारा निर्धारित सीमा के अन्तर्गत रहा।

1.1.3 बजट आकलन एवं वास्तविक

राज्य सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट दस्तावेज विशेष राजकोषीय वर्ष के राजस्व और व्यय के प्रक्षेपों या आकलनों का विवरण उपलब्ध कराता है। राजस्व और व्यय के प्राक्कलनों की परिशुद्धता की महत्ता राजकोषीय नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन के सन्दर्भ में सर्वमान्य है। बजट आकलनों से भिन्नता विविध कारणों से, जिनमें से कुछ सरकार के नियंत्रण में है, वांछित राजकोषीय उद्देश्यों के न पाने और अनुकूलतम स्तर न पाने का संकेतक है। वर्ष 2012-13 के दौरान विभिन्न संघटकों के सन्दर्भ में वास्तविकों की तुलना में बजट आकलन ने मिश्रित रुझान प्रदर्शित किए:



- सहायता अनुदान के अन्तर्गत भारत सरकार से निधियों की कम प्राप्ति ₹ 1,125 करोड़ (20.15 प्रतिशत) के कारण समग्र राजस्व प्राप्ति ₹ 412 करोड़ से कम थी। पिछले वर्ष की तुलना में करेतर राजस्व ने तीव्र बढ़ोतरी दर्शायी तथा वह चालू वर्ष के ब आ के सापेक्ष ₹ 395 करोड़ (32.69 प्रतिशत) अधिक था। राज्य का कर राजस्व भी ब आ के मुकाबले ₹ 319 करोड़ (3.41 प्रतिशत) अधिक था।
- राजस्व व्यय, वर्ष के बजट आकलनों से ₹ 1,757 करोड़ (11.18 प्रतिशत) कम था।
- मुख्यतः शिक्षा, खेल, कला व संस्कृति, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, जलापूर्ति, सफाई, आवास और शहरी विकास के अन्तर्गत कम संवितरण के कारण पूँजीगत शीर्ष के अन्तर्गत व्यय ₹ 111 करोड़ (3.04 प्रतिशत) तक अप्रयुक्त रहा।
- राजस्व, राजकोषीय तथा प्रारम्भिक घाटों के लिये वर्ष 2012-13 के बजटीय पूर्वानुमान, एफ आर बी एम अधिनियम, 2005 (वर्ष 2011 के उत्तराखण्ड अधिनियम सं. 72 द्वारा संशोधित) तथा ते वि आयोग की संस्तुतियों के अनुसार थे (चार्ट-1.1)। वर्ष 2012-13 हेतु वास्तविक, प्रक्षेपों के अन्तर्गत थे।

1.1.4 जेण्डर बजटिंग

राज्य का जेण्डर बजट महिलाओं को पूर्णतया या अंशतया लाभ पहुँचाने की दृष्टि से सम्पूर्ण बजट में से प्रस्तावित व्यय को दर्शाता है। इस हेतु राज्य बजट में प्राविधान वित्तीय वर्ष 2007-08 से प्रारम्भ किए गए। जेण्डर बजट प्रलेख में वर्षवार प्राविधान तालिका 1.3 में वर्णित है:

तालिका 1.3
वर्ष 2008-13 के दौरान जेण्डर बजटीय आवंटन (₹ करोड़ में)

वर्ष	परिव्यय			व्यय			आच्छदित विभाग
	श्रेणी I	श्रेणी II	योग	श्रेणी I	श्रेणी II	योग	
2008-09	165.36	310.42	475.78	119.63	741.64	861.27	20
2009-10	170.94	1,160.74	1,331.68	158.05	1,219.98	1,378.03	24
2010-11	255.19	1,274.24	1,529.43	177.31	1,324.59	1,501.90	26
2011-12	215.63	1,614.37	1,830.00	201.30	1,104.59	1,305.89	26
2012-13	316.41	1,921.49	2,237.90	280.26	*	280.26	29
योग	1,123.53	6,281.26	7,404.79	936.55	4,390.80	5327.35	

स्रोत: बजट प्रलेखों और विनियोग लेखे

* राज्य सरकार द्वारा सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई।

जेण्डर बजटिंग के लिए बजट प्राविधान श्रेणी I और श्रेणी II में वर्गीकृत किया गया है। श्रेणी I के अन्तर्गत प्राविधान शत-प्रतिशत महिलाओं के कल्याण हेतु होता है। श्रेणी II में कुल बजट प्राविधानों में से 30 प्रतिशत प्राविधान अनन्य रूप से महिलाओं के विकास हेतु प्रावधानित होता है। वर्ष 2008-09 से 2012-13 के दौरान दोनों श्रेणियों में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा किए गए प्राविधानों ने वर्ष 2008-09 में ₹ 475.78 करोड़ से वर्ष 2012-13 में ₹ 2,237.90 करोड़ की अभूतपूर्व वृद्धि दर्शायी।

तथापि, जेण्डर बजटिंग के अधीन कार्यान्वित योजनाओं के सही क्रियान्वयन, अनुश्रवण और मूल्यांकन हेतु राज्य सरकार राज्य स्तर पर कोई समर्पित जेण्डर बजटिंग प्रकोष्ठ नहीं गठित किया गया। राज्य सरकार उन लाभार्थियों का विवरण उपलब्ध कराने की स्थिति में भी नहीं था जो जेण्डर बजटिंग से लाभान्वित हुए। मूल्यांकन अध्ययन के अभाव में यह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता कि वास्तव में जेण्डर बजटिंग का उपयोग महिलाओं के उत्थान हेतु एक उपकरण की भाँति हो रहा था।

श्रेणी I के अन्तर्गत परिवहन और अनुसूचित जाति कल्याण विभागों में जेण्डर बजट प्रलेख 2012-13 के विश्लेषण ने निम्नलिखित दर्शाया:

परिवहन:

जेण्डर बजट प्रलेख 2012-13 श्रेणी I के अन्तर्गत परिवहन विभाग की केवल एक योजना दर्शाता है। इसका विवरण तालिका 1.3 अ में प्रदर्शित है:

तालिका 1.3 अ
परिवहन विभाग के श्रेणी I के अन्तर्गत योजना (₹ करोड़ में)

योजना	आवंटन	व्यय*	बचत	बचत का प्रतिशत
उत्तराखण्ड परिवहन निगम की बसों में छात्राओं के निःशुल्क यात्रा की प्रतिपूर्ति	5.00	0.80	4.20	84

* विनियोग लेखे

उपरोक्त तालिका इंगित करती है कि परिवहन विभाग द्वारा वर्ष 2012-13 के दौरान महिला सशक्तिकरण हेतु एक मात्र अभिकल्पित योजना के ₹ 5.00 करोड़ आवंटन के सापेक्ष केवल ₹ 0.80 करोड़ (16 प्रतिशत) का ही उपयोग किया जा सका।

अनुसूचित जातियों का कल्याण:

जेण्डर बजट प्रलेख 2012-13, अनुसूचित जाति विभाग की श्रेणी I की चार योजनाओं को दर्शाती है। इसका विवरण तालिका 1.3 ब में प्रदर्शित है:

तालिका 1.3 ब

अनुसूचित जातियों का कल्याण विभाग की श्रेणी I के अन्तर्गत योजना

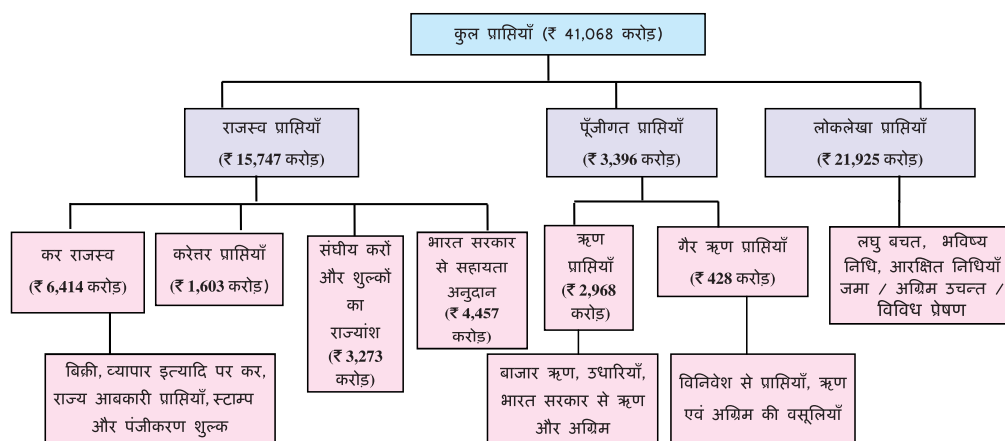
(₹ करोड़ में)

योजना	आवंटन	व्यय*	बचत	व्यय का प्रतिशत
अनुसूचित जाति की बालिकाओं के शिक्षा प्रोत्साहन हेतु कन्याधन योजना	6.00	6.00	0.00	0.00
विधवा के साथ विवाह करने पर दम्पति को पुरस्कार	0.007	0.004	0.003	42.86
आवास विहीन विधवाओं के भरणपोषण तथा उनके बच्चों की व्यवस्थापन हेतु अनुदान	11.70	11.64	0.06	0.51
बाबू जगजीवन राम बालिका छात्रावास का निर्माण	3.00	0.50	2.50	83.33

* विनियोग लेखे

उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि महिलाओं के उत्थान हेतु अभिकल्पित चार योजनाओं में से केवल एक योजना ही सम्बन्धित विभाग द्वारा पूर्णरूपेण क्रियान्वित की जा सकी। एक योजना 80 प्रतिशत से अधिक पिछड़ी रही क्योंकि उसमें 83.33 प्रतिशत की बचत थी। अन्य दो योजनाओं की प्रगति भी स्तरोनुकूल नहीं थी।

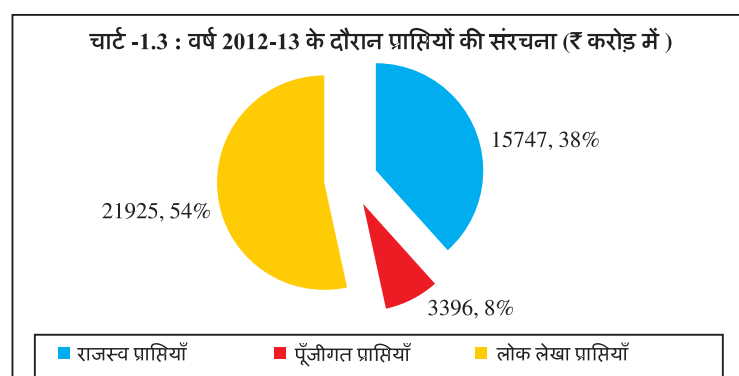
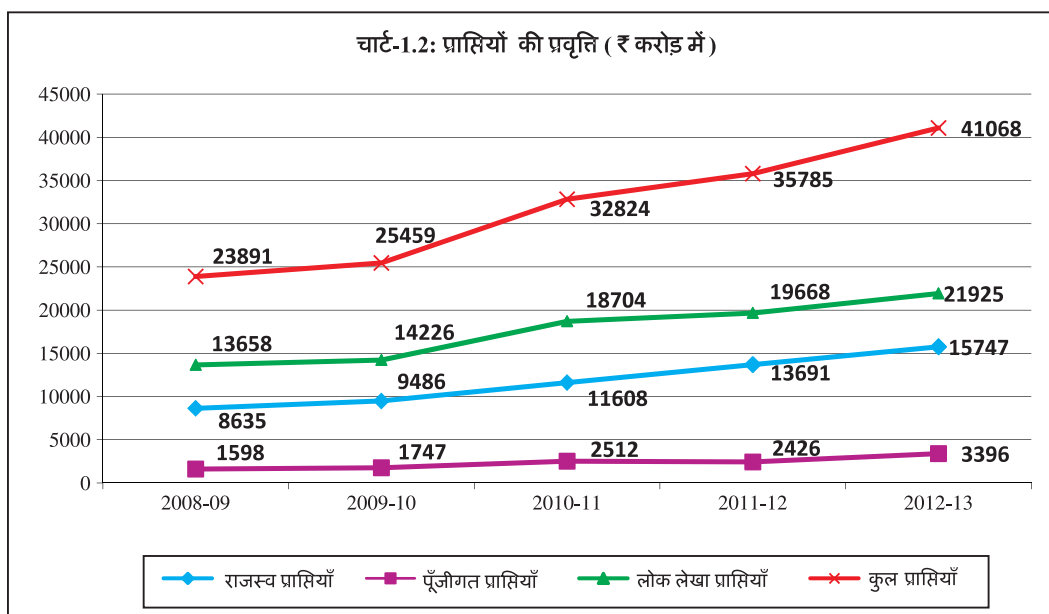
1.2 राज्य के संसाधन



1.2.1 वार्षिक वित्त लेखों के अनुसार राज्य के संसाधन

राजस्व प्राप्ति तथा पूँजीगत प्राप्ति, प्राप्ति के दो स्रोत हैं जो राज्य सरकार के संसाधनों को गठित करती हैं। राजस्व प्राप्ति में कर राजस्व, करेतर राजस्व, संघीय कर एवं शुल्कों में राज्य का अंश तथा भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान सम्मिलित हैं। पूँजीगत प्राप्ति में विविध पूँजीगत राजस्व प्राप्ति- जैसे विनिवेशों से प्राप्ति, ऋण एवं अग्रिमों की वसूली, आन्तरिक स्रोतों (बाजार

ऋण, वित्तीय संस्थाओं/ वाणिज्यिक बैंकों से लिया गया ऋण) से ऋण की प्राप्ति तथा भारत सरकार से ऋण एवं अग्रिम सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, लोक लेखा में उपलब्ध निधियों के वितरण के बाद बची निधियों को सरकार द्वारा अपने राजस्व घाटे को कम करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। तालिका 1.1 चालू वर्ष के दौरान राज्य की प्राप्ति एवं संवितरणों को प्रस्तुत करती है, जैसा इसके वार्षिक वित्तीय लेखों (परिशिष्ट-1.1) में दर्ज है; जबकि चार्ट 1.2, वर्ष 2008-13 के दौरान राज्य की प्राप्ति के विभिन्न घटकों की प्रवृत्तियों का चित्रण करता है। चार्ट 1.3 चालू वर्ष के दौरान राज्य के संसाधनों के संघटकों को चित्रित करता है।



वर्ष 2008-09 में सरकार की कुल प्राप्ति (आकस्मिकता निधि प्राप्ति को छोड़कर) ₹ 23,891 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2012-13 में ₹ 41,068 करोड़ (71.90 प्रतिशत) हो गयी। वर्ष 2012-13 की ₹ 41,068 करोड़ की प्राप्ति में से 54 प्रतिशत प्राप्ति (₹ 21,925 करोड़) लोक लेखा से थी जबकि कुल प्राप्ति का 38 प्रतिशत (₹ 15,747 करोड़) व आठ प्रतिशत (₹ 3,396 करोड़) भाग राजस्व प्राप्ति व उधारियाँ आदि से आया।

गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष राज्य की राजस्व प्राप्तियाँ 15.02 प्रतिशत बढ़ गईं। यद्यपि, वर्ष के दौरान कुल प्राप्तियों में राजस्व प्राप्तियों के अंश में कोई बदलाव नहीं देखा गया। वर्ष के दौरान कुल प्राप्तियों में पूँजीगत प्राप्तियों के अंश की बढ़ोतरी देखी गयी जिसका कारण ऋण एवं अग्रिमों की वसूली में बढ़ोतरी का होना था। (तालिका-1.1 का संदर्भ लें)।

लोक लेखा प्राप्तियों में प्रवृत्तियाँ

- लघु बचत, भविष्य निधि आदि और आरक्षित निधियों की प्राप्तियाँ, गत वर्ष की तुलना में क्रमशः ₹ 113 करोड़ और ₹ 369 करोड़ कम हो गई।
- वर्ष के दौरान उच्चतम एवं विविध प्राप्तियों में ₹ 2,644 करोड़ (21.38 प्रतिशत) की वृद्धि हुई जो कि मुख्यतः चेकों एवं देयकों के उच्चतम शीर्ष के अन्तर्गत हुई वृद्धि (₹ 2,411 करोड़) के कारण थी। यह उच्चतम शीर्ष चेक जारी करते समय क्रेडिट किया जाता है और बैंक द्वारा चेक के भुगतान की सूचना प्राप्त होने पर खारिज किया जाता है।

1.2.2 राज्य के बजट से इतर राज्य के क्रियान्वयन अभिकरणों को अन्तरित निधियाँ

केन्द्र सरकार द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण माने गये विभिन्न योजनाओं/कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु राज्य के क्रियान्वयन अभिकरणों² को सीधे प्रचुर मात्रा में निधियाँ अन्तरित की जाती हैं। ये निधियाँ, राज्य बजट/राज्य कोषागार तन्त्र के माध्यम से नहीं आती हैं। अतः राज्य की प्राप्तियाँ एवं व्यय तथा इसके साथ-साथ उनसे व्युत्पन्न अन्य राजकोषीय आँकड़े/मापदण्ड अधो-आकलित रहे। समुच्चय संसाधनों की उपलब्धता पर एक निष्पक्ष चित्रण प्रस्तुत करने के लिए, राज्य के क्रियान्वयन अभिकरणों को सीधे तौर पर अन्तरित निधियाँ परिशिष्ट-1.5 में दर्शायी गयी हैं। मुख्य कार्यक्रमों/योजनाओं को अन्तरित उल्लेखनीय धनराशि तालिका 1.4 में दर्शायी गई है:

तालिका-1.4

राज्य क्रियान्वयन अभिकरणों को अन्तरित निधियों की महत्वपूर्ण धनराशियाँ

(₹ करोड़ में)

क्रम. सं.	कार्यक्रम/योजना	राज्य के क्रियान्वयन अभिकरण	राशि
1	केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम	परियोजना प्रबंधन इकाई, स्वजल परियोजना उत्तराखण्ड, मक्कावाला, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	25.42
2	वन एवं वन्य जीव संस्थानों को सहायता अनुदान	वन अनुसंधान संस्थान (भारतीय वनीकरण अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद), पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय) (₹109.76 करोड़) और डब्लू आई आई (सरकारी स्वायत्त निकाय) (₹ 12.21 करोड़)	121.97
3	महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना	विभिन्न जिलों के डी आर डी ए, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	268.27
4	राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम	एस डब्लू एस एम उत्तराखण्ड देहरादून, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	74.28

² परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

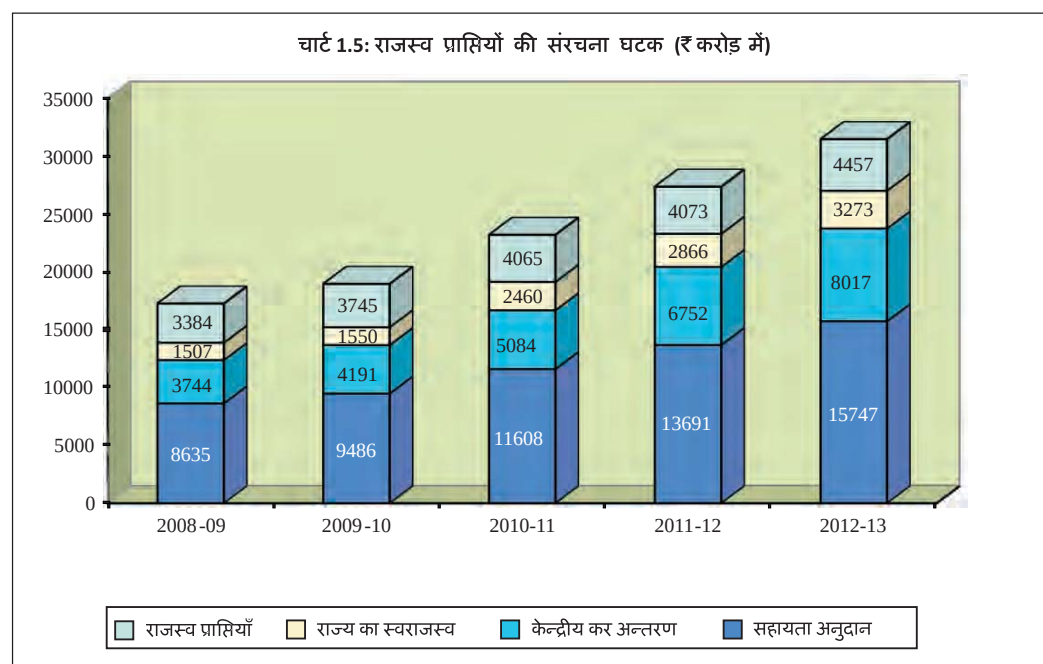
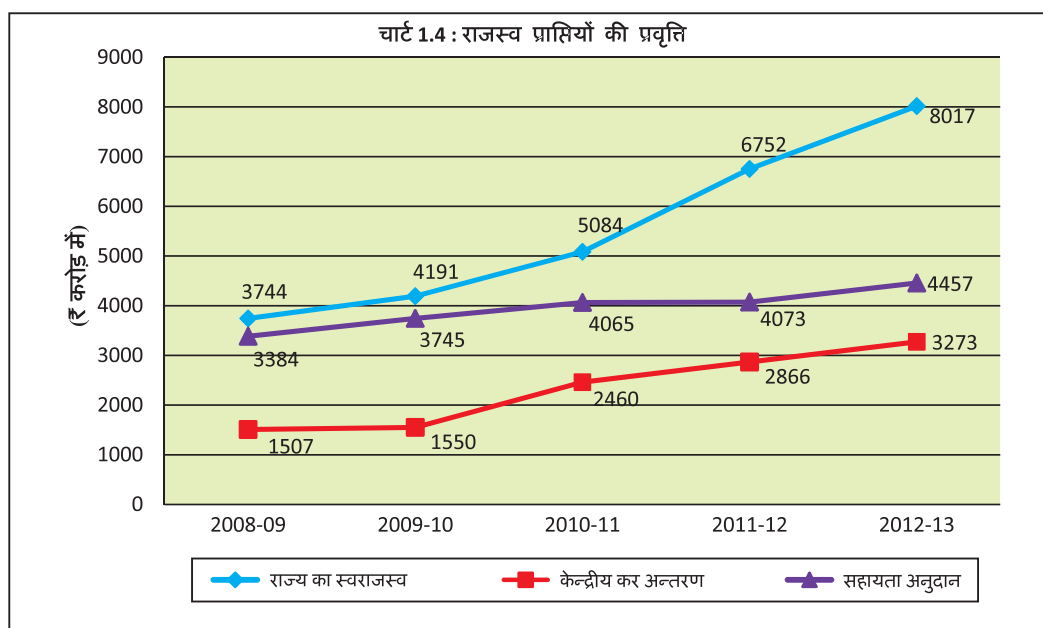
5	राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य अभियान (एन आर एच एम और जे आई आई टी) केन्द्र प्रायोजित	उत्तराखण्ड स्वास्थ्य और परिवार कल्याण समिति, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय) (₹ 110.34 करोड़) और एस पी ओ उत्तराखण्ड, देहरादून (राज्य सरकार पी एस यू) (₹ 3.04 करोड़)	113.38
6	प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पी एम जी एस वाई)	उत्तराखण्ड ग्राम सड़क विकास समिति देहरादून, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	151.24
7	राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आर एम एस ए)	उत्तराखण्ड सभी के लिये माध्यमिक शिक्षा परिषद, पंजीकृत संस्थाएँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	96.64
8	ग्रामीण आवास आई ए वाई	जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	40.81
9	सर्व शिक्षा अभियान (एस एस ए)	उत्तराखण्ड सभी के लिए शिक्षा परिषद, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	180.45
10	भारतीय तकनीकी संस्थान को सहायता	आई आई टी रुड़की, उत्तराखण्ड, पंजीकृत समितियाँ (सरकारी स्वायत्त निकाय)	146.20
योग			1218.66

स्रोत: कन्ट्रोलर जनरल ऑफ एकाउन्ट्स वैबसाइट का सेप्ट्रल प्लान स्कीम मॉनिटरिंग सिस्टम

तालिका 1.4 सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों के अधीन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु भारत सरकार के विविध मंत्रालयों से उत्तराखण्ड में विभिन्न अभिकरणों द्वारा सीधे प्राप्त उल्लेखनीय धनराशियों को दर्शाती है। वर्ष 2012-13 के दौरान इन निधियों का अधिकांश अंश प्राप्त करने वाले कार्यक्रम (i) महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना- ₹ 268.27 करोड़ (17.11 प्रतिशत), (ii) सर्व शिक्षा अभियान- ₹ 180.45 करोड़ (11.51 प्रतिशत), (iii) प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ₹ 151.24 करोड़ (9.65 प्रतिशत) (iv) भारतीय तकनीकी संस्थान को सहायता ₹ 146.20 करोड़ (9.32 प्रतिशत) (v) वन व वन्य जीव संस्थानों को सहायता अनुदान ₹ 121.97 करोड़ (7.78 प्रतिशत), (vi) राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन ₹ 113.38 करोड़ (7.23 प्रतिशत), (vii) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान ₹ 96.64 करोड़ (6.16 प्रतिशत) और (viii) राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम ₹ 74.28 करोड़ (4.74 प्रतिशत) थे। इस प्रकार, वर्ष 2012-13 के दौरान भारत सरकार द्वारा सीधे राज्य के क्रियान्वयन अभिकरणों को ₹ 1,568 करोड़ (परिशिष्ट-1.5) के अन्तरण से, राज्य संसाधनों की कुल उपलब्धता ₹ 41,068 करोड़ से बढ़कर ₹ 42,636 करोड़ हो गयी। यह भी स्पष्ट है कि भारत सरकार द्वारा सीधे क्रियान्वयन अभिकरणों को स्थानान्तरित निधियों के अनुश्रवण हेतु कोई एकल अभिकरण नहीं है। इस प्रकार तत्काल रूप से कोई आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं जिससे ज्ञात हो कि किसी विशेष वर्ष में मुख्य चिन्हित योजनाओं एवं अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं, जिन्हें राज्य क्रियान्वयन अभिकरणों द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है, पर वास्तविक रूप से व्यय की गयी निधि कितनी है।

1.3 राजस्व प्राप्ति

वित्त लेखे का विवरण-11, सरकार की राजस्व प्राप्ति का विवरण प्रस्तुत करती है। राजस्व प्राप्ति में स्वयं राज्य के कर एवं करेतर राजस्व, केन्द्रीय कर अन्तरण तथा भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान सम्मिलित हैं। वर्ष 2008-09 से 2012-13 की अवधि की राजस्व प्राप्ति के संघटक और प्रवृत्तियों को परिशिष्ट-1.3 में प्रस्तुत किया गया है तथा क्रमशः चार्ट 1.4 तथा 1.5 में भी चित्रित किया गया है:



राजस्व प्राप्तियों ने 2008-09 से 2012-13 की अवधि में निरंतर वृद्धि दर्शाई। यह 14.92 प्रतिशत की औसत वृद्धि दर के साथ वर्ष 2008-09 में ₹ 8,635 करोड़ से वर्ष 2012-13 में बढ़कर ₹ 15,747 करोड़ हो गयी।

जबकि वर्ष 2012-13 के दौरान राजस्व प्राप्तियों का 50.91 प्रतिशत राज्य के निजी कर एवं करेतर राजस्व से आया, केन्द्रीय कर अन्तरणों एवं सहायता अनुदान के समुच्चयों ने शेष 49.09 प्रतिशत का योगदान किया।

औसतन, वर्ष 2008-09 से 2012-13 तक की अवधि में राज्य की राजस्व प्राप्तियों का लगभग 46.31 प्रतिशत योगदान स्वयं राज्य की कर प्राप्तियों का रहा (चार्ट 1.5)। इससे भारत सरकार से सहायता अनुदान पर राज्य की निरन्तर निर्भरता प्रदर्शित हुई, क्योंकि राज्य अपने कर-आधार को विस्तृत करने में अक्षम रहा।

स रा घ उ के सापेक्ष राजस्व प्राप्तियों की प्रवृत्तियों को निम्न तालिका-1.5 में प्रस्तुत किया गया है:

तालिका-1.5

स रा घ उ के सापेक्ष राजस्व प्राप्तियों में प्रवृत्तियाँ

	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
राजस्व प्राप्तियाँ (रा प्रा) (₹ करोड़ में)	8,635	9,486	11,608	13,691	15,747
रा प्रा की वृद्धि दर (प्रतिशत)	9.43	9.86	22.37	17.94	15.02
रा प्रा / स रा घ उ (प्रतिशत)	15.41	13.32	14.08	14.38	14.53
उत्प्लावकता अनुपात ³					
स रा घ उ के संदर्भ में राजस्व की उत्प्लावकता	0.43	0.38	1.20	1.48	1.00
स रा घ उ के संदर्भ में राज्य के स्वयं के करों की उत्प्लावकता	0.50	0.64	1.27	2.26	0.94

वर्ष 2008-09 से वर्ष 2010-11 की अवधि में राजस्व प्राप्तियों ने वृद्धि की प्रवृत्ति दर्शाई। वृद्धि दर वर्ष 2010-11 में 22.37 प्रतिशत बढ़ गयी और इसके पश्चात वृद्धि दर घटने लगी और वर्ष 2012-13 में 15.02 प्रतिशत पर आ गई। वर्ष 2012-13 की वृद्धि दर विगत वर्ष की अपेक्षा 2.92 प्रतिशत घट गई। स रा घ उ के संदर्भ में राज्य के निजी करों का उत्प्लावकता अनुपात वर्ष 2008-09 से 2009-10 के दौरान एक से भी नीचे था और 2010-11 और 2011-12 में वृद्धि दर्शाई। गत वर्ष के सापेक्ष चालू वित्तीय वर्ष में राज्य के स्वयं के कर राजस्व में कम उत्प्लावकता देखी गई जो यह दर्शाता है कि स रा घ उ की वृद्धि के अनुपात में कर संचय कम हुआ था। वर्ष 2012-13 में, स रा घ उ में प्रत्येक एक प्रतिशत के वृद्धि के लिए राज्य के निजी कर में 0.94 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

1.3.1 राज्य के अपने संसाधन

चूँकि केन्द्रीय करों तथा सहायता अनुदान में राज्य के अंश का निर्धारण वित्त आयोग की संस्तुतियों पर आधारित होती हैं, अतिरिक्त संसाधनों को जुटाने में राज्य के प्रदर्शन का निर्धारण इसके अपने स्रोतों के संदर्भ में किया जाना चाहिए जिसमें निजी कर एवं करेतर स्रोतों से प्राप्त राजस्व समाविष्ट हैं। राज्य के अपने संसाधनों के संदर्भ में तेरहवें वित्त आयोग अनुमानों, बजट अनुमानों और एम टी एफ पी अनुमानों के सापेक्ष वास्तविकों को तालिका-1.6 में दर्शाया गया है:

³ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

तालिका-1.6

राज्य के अपने संसाधन: अनुमान के सापेक्ष वास्तविक

(₹ करोड़ में)

	तेरहवाँ वित्त आयोग अनुमान	बजट अनुमान	ए टी एफ पी अनुमान	वास्तविक	वास्तविक में प्रतिशत का अन्तर		
					तेरहवाँ वित्त आयोग अनुमान	बजट अनुमान	एमटीएफपी अनुमान
कर राजस्व	5,459	5,980	6,050	6,414	17.49	7.26	6.02
करेतर राजस्व	991	1,208	1,517	1,603	61.76	32.70	5.67

जैसा कि तालिका-1.6 में प्रदर्शित है, तेरहवें वित्त आयोग (ते वि आ) के अनुमानों के सापेक्ष राज्य का राजस्व, जो कि वर्ष 2012-13 में 6,414 करोड़ रहा, तेरहवें वित्त आयोग के निर्धारित मानक ₹ 5,459 करोड़ से अधिक था।

इसी प्रकार, वर्ष के दौरान राज्य का स्व कर राजस्व सरकार के बजट प्रावधानों से ₹ 434 करोड़ अधिक रहा। यह घटक मध्यकालीन राजकोषीय पथ विवरण (म रा प वि) के निर्धारित लक्ष्य ₹ 6,050 करोड़ से भी अधिक रहा।

₹ 1,603 करोड़ पर करेतर राजस्व (करे रा), तेरहवें वित्त आयोग के निर्धारित मानकों से ₹ 612 करोड़ अधिक था। करेतर राजस्व की वास्तविक प्राप्ति, बजट अनुमान एवं म रा प वि में निर्धारित लक्ष्य (₹ 1,517 करोड़) से क्रमशः ₹ 395 करोड़ एवं ₹ 86 करोड़ अधिक थीं।

1.3.1.1 कर राजस्व

मुख्य करों एवं शुल्कों के सन्दर्भ में सकल संग्रह तालिका 1.7 में दी गई है:

तालिका - 1.7

राज्य के अपने संसाधनों के घटक

(₹ करोड़ में)

राजस्व शीर्ष	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
बिजली, व्यापार आदि पर कर	1,911(17)	2,247(18)	2,940(31)	3,644(24)	4,289(18)
राज्य आबकारी	528(19)	705(34)	756(7)	844(12)	1,118(32)
वाहनों पर कर	167(8)	184(10)	227(23)	335(48)	304(-9)
स्टांप प्रभार और पंजीकरण शुल्क	357(-16)	399(12)	440(10)	524(19)	648(24)
माल एवं यात्रियों पर कर	06	--	--	--	--
अन्य कर	76(-16)	24(-68)	42(75)	269(540)	55(-80)
योग	3,045 (11)	3,559 (17)	4,405 (24)	5,616 (27)	6,414 (14)

कोष्ठक में दिए गए आँकड़े पिछले वर्ष की प्रतिशतता को दर्शाते हैं।

राज्य का निजी कर राजस्व, 2011-12 में 14.21 प्रतिशत वृद्धि के साथ 5,616 करोड़ से 2012-13 में ₹ 6,414 करोड़ हो गया, हालांकि, वृद्धि की दर पिछले वर्ष की तुलना में 27 प्रतिशत से 14 प्रतिशत गिरी। बिजली, व्यापार आदि पर कर न केवल कर राजस्व का एक बड़ा हिस्सा (66.87 प्रतिशत) रहा बल्कि उसमें पिछले वर्ष के सापेक्ष 17.70 प्रतिशत वृद्धि भी दर्ज की गई। राज्य के कर राजस्व का दूसरा मुख्य अंशदाता राज्य आबकारी था, जिसकी वृद्धि दर ने 2008-09 से 2012-13 के दौरान मिश्रित रुझान दिखाए हैं।

1.3.1.2 करेतर राजस्व

करेतर राजस्व की वृद्धि दर तालिका - 1.8 में दी गई है:

तालिका - 1.8					
करेतर राजस्व के प्राप्ति के रुझान					
(₹ करोड़ में)					
राजस्व शीर्ष	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
ब्याज प्राप्ति	68	54	54	51	115
लाभांश एवं लाभ	0.23	0.07	0.21	0.05	0.19
अन्य करेतर राजस्व	630.77	577.93	623.79	1048.95	1487.81
योग	699	632	678	1136	1603
पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि	4.64	(-) 9.59	7.28	67.55	41.11

करेतर राजस्व, वर्ष 2008-09 में थोड़ा सुधार दिखाने के उपरान्त, वर्ष 2009-10 में 10 प्रतिशत घटा। हालांकि, वर्ष 2010-11 में करे रा पुनः 7.28 प्रतिशत बढ़ा। वर्ष 2011-12 में यह प्रभावी तौर पर 67.56 प्रतिशत बढ़ गया। चालू वर्ष 2012-13 में भी इसने पुनः पिछले वर्ष की तुलना में 41.11 प्रतिशत का मात्रात्मक उछाल मुख्यतः पेंशन और सेवा निवृत्ति लाभों के अंशदान एवं वसूलियों (₹ 301 करोड़) एवं ऊर्जा (₹ 108.80 करोड़) में वृद्धि के कारण दर्शाया।

करे रा में महत्वपूर्ण बढ़त पूर्ववर्ती समेकित राज्य उत्तर प्रदेश के पेंशन देयताओं का, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड के मध्य प्रभाजन के कारण था। परिणामतः, उत्तराखण्ड राज्य को, उत्तर प्रदेश से ₹ 703 करोड़ प्रभाजन के रूप में वर्ष के दौरान प्राप्त हुए।

वर्ष 2012-13 के दौरान करेतर राजस्व के प्रमुख अंशदाताओं में वानिकी एवं वन्य जीव (₹ 238 करोड़), ऊर्जा (₹ 150 करोड़), ब्याज प्राप्ति (₹ 115 करोड़) और अलौह एवं धातुकर्म उद्योग (₹ 110 करोड़) थे। वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 की अवधि में करे रा में ब्याज प्राप्ति का औसत योगदान 7.58 प्रतिशत था।

1.3.2 सहायता अनुदान

भारत सरकार से वर्ष 2008-09 से 2012-13 के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान तालिका-1.9 में प्रदर्शित है:

तालिका - 1.9					
भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान के रुझान					
(₹ करोड़ में)					
विवरण	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
आयोजनेतर अनुदान	1,270	1,183	1,435	762	869
राज्य योजना के लिए अनुदान	1,906	2,334	2,253	2,840	3,040
केन्द्रीय योजना के लिए अनुदान	08	11	21	10	8
केन्द्रीय सहायतित योजना के लिए अनुदान	200	217	356	462	540
योग	3,384	3,745	4,065	4,074	4,457
विगत वर्ष से प्रतिशत वृद्धि	11	11	9	00	9
राजस्व प्राप्ति का प्रतिशत	39	39	35	30	28

वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 की अवधि में भारत सरकार से सहायता अनुदान ने वृद्धि दर्शायी। यह वर्ष 2008-09 से ₹ 3,384 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2012-13 में ₹ 4,457 करोड़ हो गयी। पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि ₹ 383 करोड़ (9.40 प्रतिशत) मुख्य रूप में राज्य की आयोजनागत योजनाओं (₹ 200 करोड़), विभिन्न आयोजनेतर अनुदानों (₹ 107 करोड़) और केन्द्रीय योजनागत स्कीमों के लिए अनुदानों (₹ 78 करोड़) में वृद्धि के कारण थी।

1.3.3 केन्द्रीय कर अन्तरण

संघीय करों तथा शुल्कों के राज्यांश के रूप में प्राप्तियाँ, 2011-12 के ₹ 2,866 करोड़ से ₹ 407 करोड़ (14.20 प्रतिशत) बढ़कर 2012-13 में ₹ 3,273 करोड़ हो गयी थीं। केन्द्रीय कर अन्तरण में समग्र वृद्धि (₹ 407 करोड़) मुख्यतः सेवा कर (₹ 136 करोड़), निगम कर से भिन्न आय पर कर (₹ 131 करोड़), सीमा एवं केन्द्रीय उत्पाद कर (₹ 95 करोड़) और निगम कर (₹ 48 करोड़) में हुई वृद्धि के कारण थी जो कि सम्पत्ति कर में ₹ 3.00 करोड़ की कमी से प्रतिसंतुलित हुई।

1.3.4 तेरहवें वित्त आयोग के अनुदानों का उपयोग

तेरहवें वित्त आयोग ने वर्ष 2010-11 से 2014-15 के दौरान ₹ 3,063 करोड़ के अन्तरण की संस्तुति की थी उसमें 31 मार्च 2013 तक ₹ 950.13 करोड़ की धनराशि अवमुक्त की गई। संस्तुतियों, वास्तविक अवमुक्ति और इसके उपयोग का विवरण तालिका 1.10 में दिया गया है:

तालिका 1.10
सहायता अनुदान संस्तुत अन्तरण और वास्तविक अवमुक्ति (₹ करोड़ में)

क्रम सं.	अन्तरण	वि.आ. की संस्तुति	वास्तविक अवमुक्ति	प्रयुक्त धनराशि
1.	स्थानीय निकाय			
	(अ) पंचायती राज संस्थाओं को अनुदान	386.42	166.64	124.02
	(ब) पंचायती राज संस्थाओं को सामान्य दक्षता अनुदान	204.56		3.43
	(स) शहरी स्थानीय निकायों को अनुदान	124.38	56.49	33.44
	(द) शहरी स्थानीय निकायों को सामान्य दक्षता अनुदान	65.84		
2.	देवीय आपदा राहत			
	(i) देवीय आपदा राहत निधि	585.14	211.48	105.89
	(ii) क्षमता निर्माण	20.00	12.00	8.00
3.	परिणामी अनुदानों का सुधार			
	(i) न्याय प्रदान में सुधार	102.22	30.66	20.41
	(ii) यू आई डी के निर्गमन हेतु प्रोत्साहन	36.00	3.60	00
	(iii) सांख्यिकीय प्रणाली सुधार	13.00	2.60	2.58
	(iv) कर्मचारी एवं पेंशन डाटाबेस	5.00	2.50	5.18
	(v) जिला इनोवेशन निधि	13.00	6.50	00.00
4.	पर्यावरण सम्बन्धी अनुदान			
	(i) वन	205.44	89.88	88.48
	(ii) जल क्षेत्र प्रबन्ध	76.00	19.00	00.00
5.	प्राथमिक शिक्षा	197.00	106.00	106.00
6.	सड़कें एवं पुल	329.00	149.00	149.00
7.	राज्य हेतु विशिष्ट अनुदान			
	(i) देहरादून हेतु मल निकास योजना	150.00	15.55	00.00
	(ii) पुलिस प्रशिक्षण और पुलिस अवसंरचना का उन्नयन	70.00	21.00	17.06

(iii) पर्यटन विकास	100.00	14.78	11.15
(iv) पाँच नर्सिंग प्रशिक्षण महाविद्यालयों की स्थापना	100.00	00.00	00.00
(v) नये विधानसभा भवन का निर्माण	88.00	00.00	00.00
(vi) संस्कृति विकास	45.00	11.25	00.00
(vii) हल्द्वानी (नैनीताल) में अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय क्रीडा परिसर का निर्माण	25.00	00.00	00.00
(viii) उत्तराखण्ड तकनीकी शिक्षा परिषद, रुड़की का उन्नयन	17.00	00.00	00.00
(ix) सीमा क्षेत्र विकास	105.00	31.20	00.00
योग	3063.00	950.13	674.64

स्रोत: राज्य सरकार

भारत सरकार द्वारा ते वि आ की अनुशंसाओं के अनुसरण में वर्ष 2012-13 तक की गई अवमुक्ति और राज्य सरकार के विभिन्न विभागों/अभिकरणों द्वारा उपयोग की सूचना/आँकड़ों के विश्लेषण ने दर्शाया कि:

- ₹ 950 करोड़ की अवमुक्त धनराशि में से राज्य सरकार मार्च 2013 तक केवल ₹ 675 करोड़ (71 प्रतिशत) ही उपयोग कर सकी।
- राज्य विशिष्ट अनुदानों में निधियों का कम उपयोग (70 प्रतिशत) देखा गया।

1.4 पूँजीगत प्राप्ति

पूँजीगत प्राप्ति या तो ऋणोत्तर पूँजीगत प्राप्ति जैसे सरकारी कंपनियों / निगमों में इक्विटी के विनिवेश से प्राप्ति और ऋणों एवं अग्रिमों की वसूलियाँ अथवा ऋण पूँजीगत प्राप्ति हैं, जो कि समेकित निधि के लोक ऋण भाग में क्रेडिट की जाती है। लोक ऋण प्राप्ति विस्तृत रूप में दो श्रेणियों; (अ) संघ सरकार से ऋण/ अग्रिम (ब) बैंकों, वित्तीय संस्थाओं से नेगोसियेटेड ऋण या राज्य विकास ऋण निर्गमों के माध्यम से खुले बाजार की उधारियों, में विभाजित है। संघ सरकार से ऋणोत्तर पूँजीगत प्राप्ति एवं ऋणों/ अग्रिमों का हिस्सा नगण्य है और पूँजीगत प्राप्ति मुख्यतः बैंकों, वित्तीय संस्थानों एवं खुले बाजार से उधारियाँ हैं जैसा कि तालिका 1.11 में वर्णित है:

तालिका 1.11
राजस्व संरचना एवं वृद्धि का रूझान (₹ करोड़ में)

राज्य की प्राप्ति का स्रोत	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
पूँजीगत प्राप्ति (पूँ प्रा)	1,598	1,748	2,512	2,427	3,396
विविध पूँजीगत प्राप्ति	--	--	--	--	--
ऋणों एवं अग्रिमों की वसूली	54	65	85	91	428
लोक ऋण प्राप्ति	1,544	1,683	2,427	2,336	2,968
ऋण पूँजीगत प्राप्ति की वृद्धि दर	11	9	44	(-)4	27
ऋणोत्तर पूँजीगत प्राप्ति की वृद्धि दर	(-)21	20	31	7	370
स रा घ उ की वृद्धि दर	22.18	26.25	18.71	12.14	15.06
पूँजीगत प्राप्ति की वृद्धि दर (प्रतिशत)	9	9	44	(-) 3	40

1.4.1 ऋणों एवं अग्रिमों की वसूलियाँ

ऋणों एवं अग्रिमों की वसूलियों की वृद्धि दर ने 2008-09 से 2012-13 के दौरान बढ़ोतरी की प्रवृत्ति दिखायी। यह 2009-10 से 2011-12 के दौरान लगातार 19 प्रतिशत की औसत दर से बढ़ी। हालांकि, चालू वर्ष के दौरान वसूलियाँ मुख्य रूप से ऊर्जा क्षेत्र द्वारा पुनर्भुगतान (₹ 422 करोड़) के कारण थी।

1.4.2 आन्तरिक स्रोतों से ऋण प्राप्तियाँ

2008-09 से 2012-13 की अवधि में सरकारी प्राप्तियों के स्रोत बाजार ऋण, वित्तीय संस्थानों इत्यादि से ऋण प्राप्तियाँ बने रहे। राजस्व आधिक्य के साथ-साथ पर्याप्त रोकड़ शेष के बावजूद भी सरकार ने आंतरिक उधारियों द्वारा निधि का संचय किया।

1.4.3 भारत सरकार से ऋण व अग्रिम

उत्तराखण्ड राज्य विशेष श्रेणी राज्य होने के कारण भारत सरकार से सहायता अनुदान एवं ऋण 90:10 के अनुपात में प्राप्त करता है। इसलिए भारत सरकार से ऋण के सन्दर्भ में राज्य सरकार के बकाया दायित्व, कुल लोक ऋण का केवल 2.52 प्रतिशत है।

1.5 लोक लेखा प्राप्तियाँ

प्राप्तियाँ एवं वितरण के कतिपय लेनदेनों के सन्दर्भ में यथा लघु बचतों, भविष्य निधि, आरक्षित निधियाँ, जमाओं, उचन्तों, प्रेषणों इत्यादि जो कि संचित निधि का भाग नहीं होते, को संविधान के अनुच्छेद 266 (2) द्वारा स्थापित लोक लेखा के अधीन रखा जाता है एवं ये राज्य विधायिका द्वारा मत के विषयाधीन नहीं हैं। वितरणों के पश्चात शेष राशि सरकार के उपयोग के लिए है। तालिका 1.12, 2008-09 से 2012-13 की अवधि के दौरान सरकार की लोक लेखा प्राप्तियों को दर्शाती है:

तालिका 1.12
लोक लेखा प्राप्तियों के रुझान (₹ करोड़ में)

विभिन्न शीर्षों के अधीन संसाधन	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
लोक लेखा प्राप्तियाँ					
अ. लघु बचत, भविष्य निधि इत्यादि	868	1,422	1,373	1,272	1,159
ब. आरक्षित निधियाँ	169	52	153	649	280
स. जमा एवं अग्रिम	1,748	2,223	2,464	2,331	2,359
द. उचन्त एवं विविध	7,846	9,387	11,460	12,366	15,010
य. प्रेषण	3,027	1,142	3,254	3,050	3,117
योग	13,658	14,226	18,704	19,668	21,925

तालिका 1.12 दर्शाती है कि लोक लेखा प्राप्तियाँ 2008-09 से 2012-13 तक ₹ 8,267 करोड़ (61 प्रतिशत) बढ़ गयी जो कि मुख्यतः उचन्त एवं विविध में ₹ 7,164 करोड़ (91 प्रतिशत) वृद्धि के कारण थी।

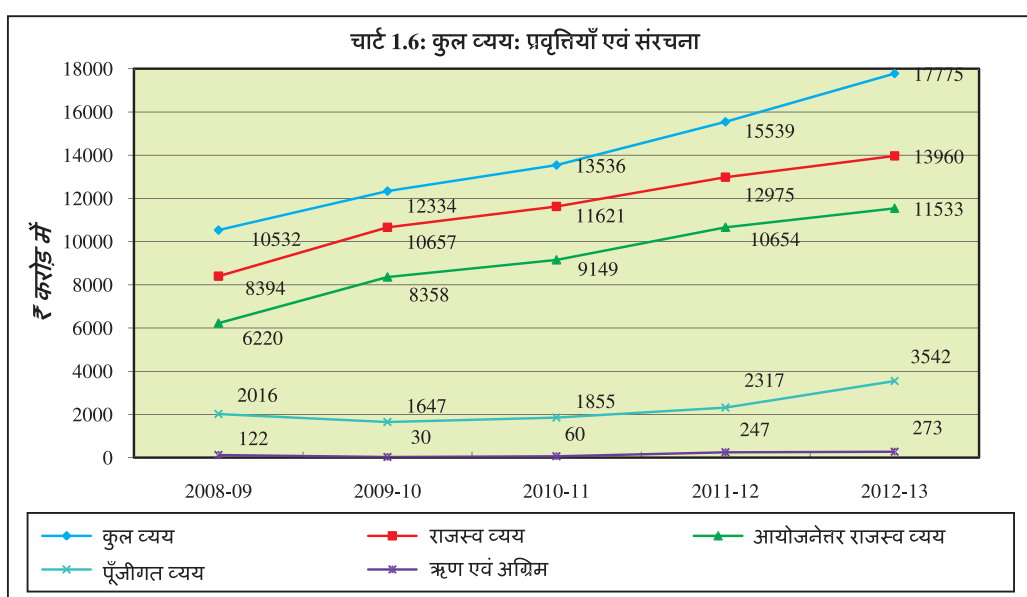
1.6 संसाधनों का उपयोग

राज्य सरकार के स्तर पर व्यय के आबंटन का विश्लेषण महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि प्रमुख व्यय दायित्व राज्य सरकार के सुपुर्द होते हैं। राजकोषीय दायित्व विधायन के ढाँचे के अन्तर्गत, घाटे अथवा उधार द्वारा वित्तपोषित लोक व्यय को बढ़ाने में बजटीय अवरोध होते हैं। इसलिए यह सुनिश्चित किया जाना महत्वपूर्ण है कि राज्य स्तर पर चालू राजकोषीय सुधार और सुदृढीकरण प्रक्रिया विशेषकर

विकासपरक और सामाजिक क्षेत्रों की ओर उन्मुख व्यय की कीमत पर न हो। राज्य में व्यय के आबंटन के विश्लेषण पर चर्चा नीचे की गई है:

1.6.1 व्यय के संघटक एवं वृद्धि

चार्ट 1.6 पाँच वर्षों (2008-09 से 2012-13) की अवधि में कुल व्यय की प्रवृत्तियों को दर्शाता है तथा इनकी संरचनाओं को 'आर्थिक वर्गीकरण' एवं 'क्रियाकलापबद्ध व्यय' दोनों के सन्दर्भ में क्रमशः चार्ट 1.7 एवं 1.8 में चित्रित किया गया है।



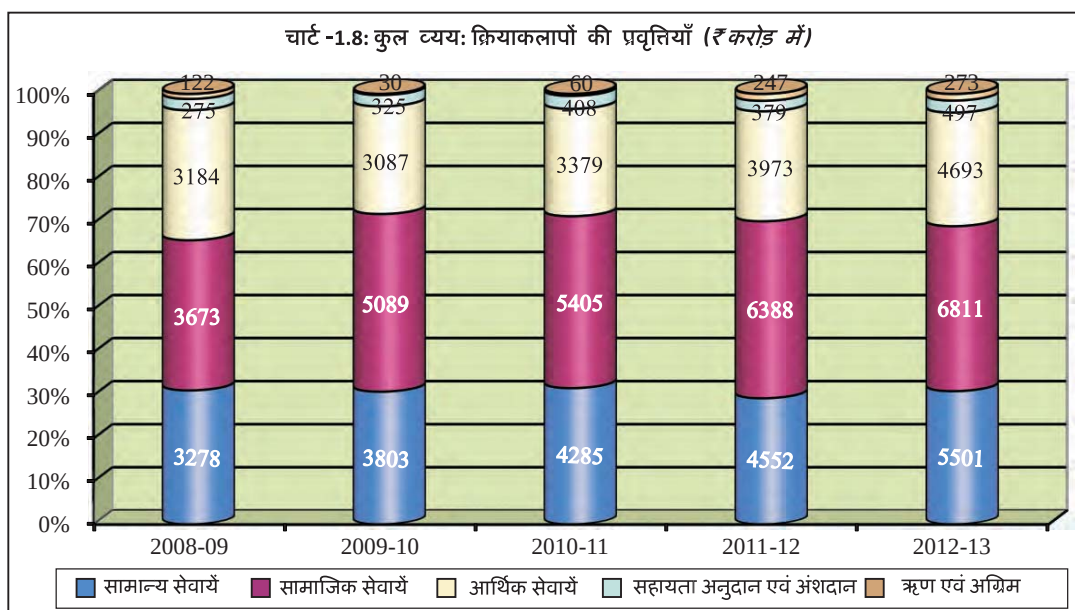
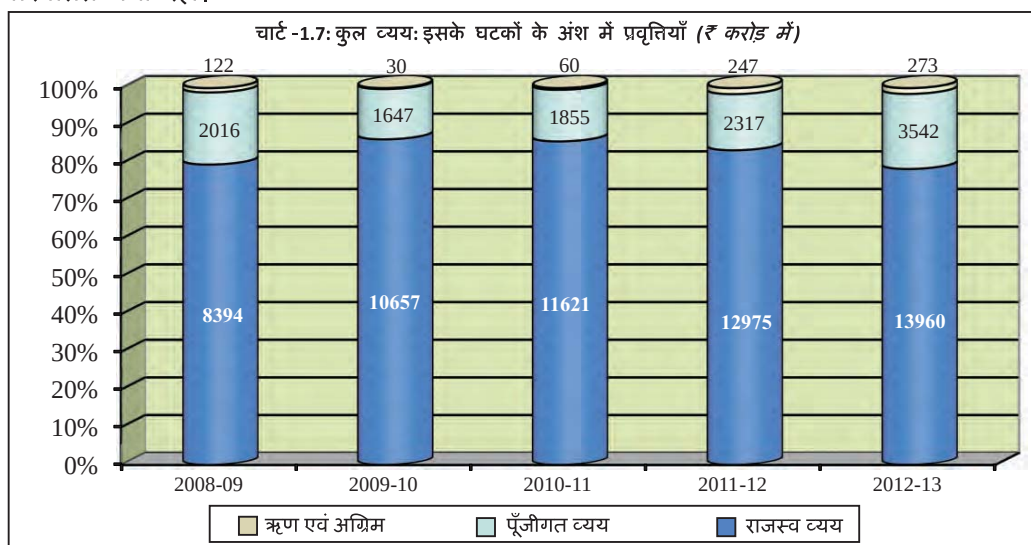
राज्य का कुल व्यय (टी ई): वर्ष 2008-13 के दौरान 12.92 प्रतिशत प्रतिवर्ष की औसत दर पर बढ़ा। पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2012-13 के दौरान कुल व्यय में ₹ 2,236 करोड़ (14.39 प्रतिशत) की बढ़ोतरी राजस्व व्यय व पूँजीगत व्यय में क्रमशः ₹ 985 करोड़ व ₹ 1,225 करोड़ की वृद्धि के कारण हुई। ऋण व अग्रिमों का संवितरण भी ₹ 26 करोड़ बढ़ा।

राजस्व व्यय (आर ई): चालू वर्ष के दौरान राजस्व व्यय में वृद्धि (₹ 985 करोड़) (i) सामान्य सेवाओं (₹ 897 करोड़), (ii) सहायता अनुदान एवं अशंदां (₹ 118 करोड़) एवं (iii) सामाजिक सेवाओं (₹ 76 करोड़) में वृद्धि के कारण हुई। यह वृद्धि आर्थिक सेवाओं में व्यय (₹ 106 करोड़) में कमी से प्रतिसंतुलित हुई।

पूँजीगत व्यय (सी ई): पूँजीगत व्यय में वर्ष के दौरान वृद्धि (₹ 1,225 करोड़) (i) सामाजिक सेवाओं (₹ 346 करोड़), (ii) आर्थिक सेवाओं (₹ 827 करोड़) तथा (iii) सामान्य सेवाओं (₹ 52 करोड़) में वृद्धि के कारण हुई। कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में इसने वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 के दौरान विचलन-शील प्रवृत्ति दर्शाई जो वर्ष 2008-09 में 19.14 प्रतिशत तथा वर्ष 2012-13 में 19.93 प्रतिशत था। पूँजीगत व्यय में 2009-10 में 2008-09 के मुकाबले कमी हुई लेकिन पिछले तीन वर्षों में बढ़ती हुई

प्रवृत्ति दर्शाई और चालू वर्ष में ₹ 3,542 करोड़ रही। तथापि, वास्तविक व्यय, राज्य सरकार द्वारा उनके बजट (₹ 3,653 करोड़) तथा एम टी एफ पी एस (₹ 4,547 करोड़) में परिकल्पित लक्ष्य के नीचे था।

व्यय के इन घटकों का सापेक्ष अंश जो विगत (2009-12) में लगभग अपरिवर्तित रहा। वर्तमान वर्ष में पूँजीगत व्यय के अंश के सन्दर्भ में बढ़ोतरी होते हुए पूरा अभाव दर्शाया। गैर विकासात्मक समझे जाने वाले ब्याज भुगतानों सहित सामान्य सेवाओं पर व्यय का अंश वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 के दौरान लगभग अपरिवर्तित रहा। सामाजिक सेवाओं का व्यय वर्ष 2011-12 के 41 प्रतिशत से थोड़ा घटकर वर्ष 2012-13 में 38 प्रतिशत हो गया। आर्थिक सेवाओं ने वर्ष 2008-09 से वर्ष 2010-11 की अवधि में घटने की प्रवृत्ति दर्शाई और 2011-12 एवं 2012-13 में लगभग अपरिवर्तित बनी रही।



राज्य का राजस्व व्यय, 14.19 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से 2008-09 से 2012-13 के दौरान ₹ 5,566 करोड़ (66.31 प्रतिशत) बढ़कर ₹ 8,394 करोड़ से ₹ 13,960 करोड़ हो गया।

वर्ष 2008-09 से 2012-13 के दौरान राज्य का आयोजनेतर राजस्व व्यय (एन पी आर ई) ₹ 5,313 करोड़ (85.42 प्रतिशत) बढ़कर ₹ 6,220 करोड़ से ₹ 11,533 करोड़ हो गया। चालू वर्ष के दौरान, एन पी आर ई में वृद्धि (₹ 879 करोड़) मुख्यतः वेतन (₹ 480 करोड़) और ब्याज अदायगियों (₹ 320 करोड़) में वृद्धि के कारण थी।

राज्यों के राजस्व व्यय में आयोजनागत राजस्व व्यय (पी आर ई) के अंश में 2008-11 के दौरान वृद्धि हुई लेकिन वर्ष 2011-12 के दौरान इसने ₹ 151 करोड़ (6.11 प्रतिशत) की कमी दर्शायी। चालू वर्ष के दौरान इसमें पुनः पिछले वर्ष की तुलना में ₹ 106 करोड़ (4.57 प्रतिशत) की बढ़ोतरी हुयी जो मुख्यतः शिक्षा, क्रीड़ा, कला और संस्कृति (₹ 143 करोड़), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण (₹ 57 करोड़), समाज कल्याण (₹ 39 करोड़) और परिवहन (₹ 11 करोड़) में वृद्धि के फलस्वरूप थी। यह अंशतः कृषि (₹ 151 करोड़) और ग्राम्यविकास (₹ 57 करोड़) की कमी के फलस्वरूप प्रतिसंतुलित हुयी।

पुनः वर्ष 2012-13 की अवधि के लिए नीचे तालिका 1.13 वास्तविक एन पी आर ई का राज्य सरकार के विभिन्न स्तरों पर किये गये अनुमानों के संदर्भ में ब्योरा देती है:

तालिका-1.13
वर्ष 2012-13 के अनुमानों के सापेक्ष वास्तविक आयोजनेतर राजस्व व्यय (₹ करोड़ में)

आयोजनेतर व्यय (एन पी आर ई)	तेरहवें वित्त आयोग द्वारा निर्धारण	राज्य सरकार द्वारा निर्धारण		
		बजट	एम टी एफ पी एस	वास्तविक
	9,390	14,883	15,017	11,533

स्रोत: तेरहवें वित्त आयोग का प्रतिवेदन, वार्षिक वित्तीय प्रतिवेदन (उत्तराखण्ड शासन) व वित्त लेखे

चालू वर्ष के दौरान एन पी आर ई, (₹ 11,533 करोड़) तेरहवें वित्त आयोग (₹ 9,390 करोड़) द्वारा निर्धारित मानकीय निर्धारण से ₹ 2,143 करोड़ (22.82 प्रतिशत) अधिक हो गया किन्तु यह क्रमशः राजकोषीय सुधार पथ (₹ 14,883 करोड़) और मध्यकालिक राजकोषीय नीति (₹ 15,017 करोड़) में राज्य सरकार द्वारा अनुमानित प्रक्षेपण से कम था।

1.6.2 वचनबद्ध व्यय

राजस्व लेखे पर राज्य सरकार के वचनबद्ध व्यय में मुख्यतः ब्याज भुगतान, वेतन और पारिश्रमिक पर व्यय, पेंशन और उपदान शामिल होते हैं। तालिका 1.14 और चार्ट 1.9 वर्ष 2008-13 के दौरान इन घटकों पर व्यय की प्रवृत्तियों को प्रदर्शित करते हैं।

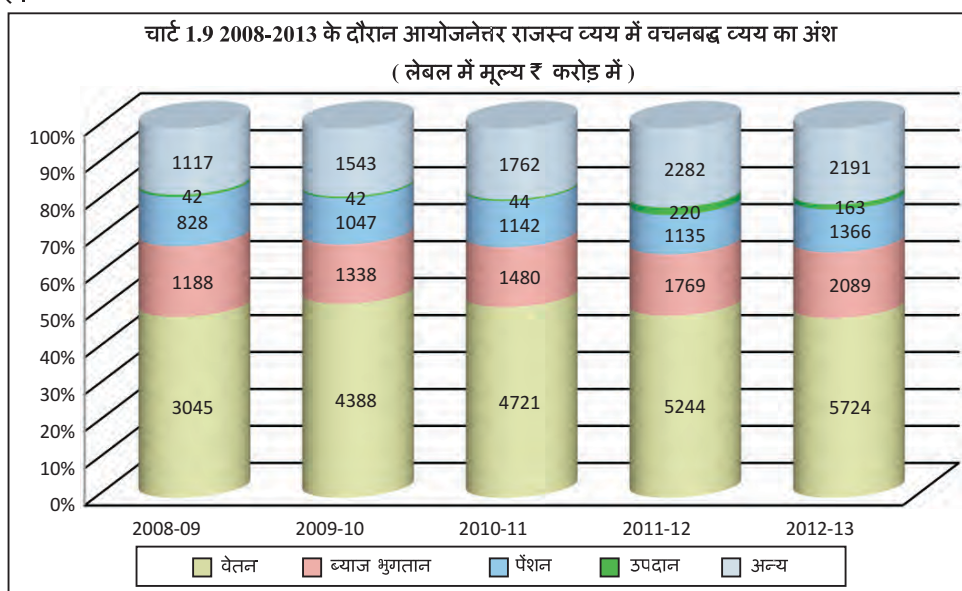
तालिका-1.14
वचनबद्ध व्यय के घटक (₹ करोड़ में)

वचनबद्ध व्यय के घटक	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13		
					बी ई	वास्तविक	भिन्नता का प्रतिशत
वेतन और पारिश्रमिक, जिसमें	3,045 (35)	4,388 (46)	4,721 (41)	5,244 (40)	6,513 (41)	5,724 (41)	(-) 12.11
आयोजनेतर शीर्ष	2,728	4,114	4,464	4,971		5,423	
योजनागत शीर्ष*	317	274	257	273		301	

ब्याज भुगतान	1,188 (14)	1,338 (14)	1,480 (13)	1,769 (14)	2,025 (13)	2,089 (15)	(+) 3.16
पेंशन पर व्यय	828 (10)	1,047 (11)	1,142 (10)	1,135 (9)	1,440 (9)	1,366 (10)	(-) 5.14
उपदान	42 (0.50)	42 (0.44)	44	220 (2)	397 (3)	163 (1)	(-) 58.94
कुल वचनबद्ध व्यय	5,103	6,815	7,387	8,368 (64)	10,375 (66)	9,342 (67)	(-) 9.96
अन्य घटक	1,117	1,543	1,762	2,286	4508	2191	(-) 51.40
कुल एन पी आर ई	6,220	8,358	9,149	10,654	14,883	11,533	(-) 22.51
कुल राजस्व व्यय	8,394	10,657	11,621	12,975	15,717	13,960	(-) 11.18
राजस्व प्राप्ति	8,635	9,486	11,608	13,691	16,159	15,747	(-) 2.55

कोषक के आँकड़े राजस्व प्राप्ति से प्रतिशत को इंगित करते हैं।

*केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजनाओं के अंतर्गत वेतन एवं पारिश्रमिक भुगतान भी आयोजनागत शीर्ष में शामिल हैं।



2008-09 में वचनबद्ध व्यय जो राजस्व प्राप्ति के 59.10 प्रतिशत था, चालू वर्ष के दौरान कमोबेश बराबर (59.33 प्रतिशत) या अधिक रहा तथापि 2008-13 के अवधि के दौरान यह ₹ 4,239 करोड़ बढ़ा। राज्य सरकार को चाहिए कि वचनबद्ध व्यय को सन्निहित करने हेतु कदम उठाये क्योंकि विकासपरक कार्यकलापों के लिए व्यय करने हेतु सरकार के लिए यह कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता है।

वेतन एवं पारिश्रमिक

वेतन पर व्यय, छठे वेतन आयोग की सिफारिशों के क्रियान्वयन के कारण वर्ष 2008-09 में ₹ 3,045 करोड़ से 44 प्रतिशत (₹ 1,343 करोड़) बढ़कर वर्ष 2009-10 में ₹ 4,388 करोड़ हो गया था। यद्यपि, वर्ष 2010-11, 2011-12 और 2012-13 के दौरान वेतन पर व्यय क्रमशः 7.59 प्रतिशत, 11.08 प्रतिशत और 9.15 प्रतिशत ही बढ़ा। इन तीन वर्षों में वेतन व्यय ते वि आ के अनुमानों से अधिक था। तथापि चालू वर्ष के लिए राज्य सरकार द्वारा निर्धारित बजट लक्ष्य (₹ 6,513 करोड़) और एम टी एफ पी एस (₹ 6,505 करोड़) में काफी नीचे थे।

ते वि आ के मानकों में नियत है कि वेतन मद के अन्तर्गत व्यय, राजस्व व्यय के ब्याज भुगतानों व पेंशन का शुद्ध 35 प्रतिशत होना चाहिए, जबकि चालू वर्ष में वेतन पर वास्तविक व्यय 50 प्रतिशत के आसपास था।

पेंशन भुगतान

राज्य सरकार ने पेंशन दायित्वों का अनुमान ऐतिहासिक वृद्धि दर के आधार पर लगाया था न कि वास्तविकता के आधार पर। वर्ष 2012-13 में पेंशन पर व्यय ₹ 1,366 करोड़ था, जो राजस्व प्राप्ति का 8.67 प्रतिशत था। पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2011-12 के दौरान पेंशन भुगतान लगभग स्थिर बना रहा लेकिन चालू वर्ष के दौरान पेंशन भुगतान, विगत वर्ष की अपेक्षा 20.35 प्रतिशत बढ़ा। तेरहवें वित्त आयोग द्वारा, चालू वर्ष के लिए निर्धारित मानक (₹ 1,329 करोड़) से थोड़ा सा अधिक (₹ 37 करोड़) था (ते वि आ के प्रतिवेदन का अनुलग्नक 7.7)।

राज्य सरकार ने भविष्य में बढ़ते पेंशन दायित्व से पड़ने वाले प्रभाव को कम करने के लिए 01 अक्टूबर 2005 या उसके बाद भर्ती कर्मचारियों के लिए एक अंशदायी पेंशन योजना भी लागू की है।

ब्याज भुगतान

जैसा कि तालिका 1.14 में दर्शित है, वर्ष 2008-13 की अवधि में ब्याज भुगतान प्रारम्भिक तौर पर पिछले ऋणों के कारण 75.84 प्रतिशत बढ़ गया था। वर्ष 2012-13 के दौरान ब्याज भुगतान में आन्तरिक ऋणों⁴ पर ब्याज (₹ 1,486 करोड़), लघु बचत, भविष्य निधि आदि (₹ 402 करोड़), अन्य देयताएँ (₹ 162 करोड़) और भारत सरकार से लिए हुए ऋण एवं अग्रिम (₹ 39 करोड़) शामिल थे। चालू वर्ष के दौरान ब्याज भुगतान (₹ 2,089 करोड़) राजस्व प्राप्ति का 13.27 प्रतिशत था, जो कि चालू वर्ष के लिए राज्य सरकार के बजट द्वारा निर्धारित लक्ष्य ₹ 2,025 करोड़ से उच्च था और तेरहवें वित्त आयोग द्वारा चालू वर्ष हेतु निर्धारित मानक (₹ 1,757 करोड़) से ₹ 332 करोड़ से भी अधिक था। यद्यपि, राज्य की एम टी एफ पी एस में ब्याज भुगतान लक्ष्य ₹ 2,119 करोड़ से ₹ 30 करोड़ कम था।

उपदान

किसी भी कल्याणकारी राज्य में समाज के सुविधाविहीन भाग को उपदान/आर्थिक सहायता प्रदान करना असामान्य नहीं है। उपदान न केवल स्पष्ट रूप से अपितु अनुमानित उपदानित लोक सेवा प्रदान करते हुये लोगों को बाँटा जाता है। अनुमानित उपदानों में वितीय संस्थानों को बजटीय सहयोग, निवेशों पर अपर्याप्त प्राप्ति और सरकार द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक सेवाएं प्रदान करने पर उपभोगित कीमत की कम वसूली आते हैं।

वितीय लेखों (परिशिष्ट III) ने पिछले पाँच सालों में सीधे तौर पर दिये गये उपदान ₹ 41.94 करोड़ (2008-09), ₹ 42.45 करोड़ (2009-10), ₹ 43.49 करोड़ (2010-11), ₹ 219.67 करोड़ (2011-12) तथा ₹ 163.23 करोड़ (2012-13) को प्रदर्शित किया।

वर्ष के दौरान विगत वर्ष की तुलना में उपदान में ₹ 56.44 करोड़ (25.69 प्रतिशत) की कमी पाई गई। कमी का मुख्य कारण खाद्य को उपदान की कम राशि (₹ 53.36 करोड़) देना था।

⁴ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

1.6.3 राज्य सरकार द्वारा स्थानीय निकायों एवं अन्य संस्थानों को वित्तीय सहायता

पिछले वर्षों की तुलना में चालू वर्ष के दौरान स्थानीय निकायों एवं अन्य संस्थानों को अनुदान द्वारा प्रदत्त सहायता राशि तालिका-1.15 में प्रस्तुत है:

तालिका -1.15: स्थानीय निकायों आदि को वित्तीय सहायता

(₹ करोड़ में)

संस्थानों को वित्तीय सहायता	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	
					ब आ	वास्तविक
शैक्षिक संस्थान (सहायता प्राप्त विद्यालय, सहायता प्राप्त महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि)	198.99	267.99	488.49	403.45	526.25	501.83
नगर निगम तथा नगरपालिकाएँ	106.20	122.47	154.72	175.76	352.24	306.28
जिला परिषद एवं अन्य पंचायती राज संस्थाएँ	168.57	202.25	252.96	203.04	495.68	190.59
विकास अभिकरण	588.44	571.47	526.00	409.35	572.43	480.80
चिकित्सालय तथा अन्य धर्मार्थ संस्थाएँ	38.89	44.52	71.23	86.98	137.05	134.78
ऊर्जा (ऊर्जा का गैर-परम्परागत स्रोत)	69.79	24.39	7.50	6.32	12.57	12.89
कृषि शोध एवं शैक्षिक संस्थान भूमि सुधार करने हेतु भू-अभिलेखों का अद्यतनीकरण और वन्यजीव संरक्षण	217.73	98.62	151.15	205.54	203.18	79.71
सहकारिता	3.49	13.22	9.56	7.30	12.32	9.75
पशुपालन, दुग्ध विकास तथा मत्स्य पालन	31.51	14.79	13.16	8.65	9.85	8.75
सचिवालय आर्थिक सेवाएँ एवं पर्यटन	27.51	11.43	18.43	29.34	69.10	36.28
सामाजिक सुरक्षा एवं अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग का कल्याण	122.77	133.65	97.46	211.10	271.71	254.31
अन्य संस्थाएँ	85.46	371.24	131.61	31.12	136.37	115.75
योग	1,659.35	1,876.04	1,922.27	1,777.95	2,798.75	2,131.72
राजस्व व्यय के प्रतिशत के रूप में सहायता	19.77	17.60	16.54	13.70	17.80	15.27

स्रोत: वी एल सी प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), उत्तराखण्ड।

स्थानीय निकायों एवं अन्य संस्थाओं को प्रदत्त कुल सहायता ने वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 की अवधि में उतार-चढ़ाव की प्रवृत्ति दिखाई। वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2011-12 में इन निकायों की सहायता में ₹ 144 करोड़ (7.51 प्रतिशत) उतार देखा गया, जबकि यह सहायता वर्ष के दौरान ₹ 354 करोड़ (19.90 प्रतिशत) बढ़ गया। विश्वविद्यालय एवं शैक्षिक संस्थाओं, विकास अभिकरणों को प्रदत्त सहायता राशि कुल वित्तीय सहायता का 46 प्रतिशत थी।

इस वर्ष के दौरान सहायता में वृद्धि, मुख्यतः शैक्षिक संस्थाओं (₹ 98 करोड़) शहरी निकाय एवं पी आर आई (₹ 118 करोड़) और विकास अभिकरणों (₹ 71 करोड़) चिकित्सालय एवं अन्य धर्मार्थ संस्थाओं (₹ 48 करोड़) के अन्तर्गत थी जो कि कृषि सहायता (126 करोड़) की कमी से कुछ हद तक प्रतिसंतुलित हुयी।

1.6.4 स्थानीय निकाय: परिचय, कार्यों का अवक्रमण, निधि और लेखाकरण, लेखापरीक्षा कार्य और प्रतिवेदन कार्य की व्यवस्था

उत्तराखण्ड राज्य नवम्बर 2000 में अस्तित्व में आया। प्रधान महालेखाकार (ले एवं हक), उत्तराखण्ड, देहरादून के प्रशासनिक नियंत्रण में वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय लेखा एवं लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड, देहरादून का कार्यालय 2004 में स्थापित हुआ। भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग में वर्ष 2012 में, लेखा प्रकार्यों की पुनःसंरचना के पश्चात, वरिष्ठ उप महालेखाकार (एल बी ए और ए), उत्तराखण्ड के कार्यालय को, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड, देहरादून के सामाजिक एवं एल बी सेक्टर के साथ मिला दिया गया है।

उत्तराखण्ड में पी आर आई की 7,663 लेखापरीक्षित इकाईयाँ हैं जिनकी तीन श्रेणियाँ हैं-ग्राम पंचायत, मध्यवर्ती पंचायत और जिला पंचायत तथा यू एल बी की 72 लेखापरीक्षित इकाईयाँ जैसे - नगर निगम, नगर पालिका परिषद और नगर पंचायत, वरिष्ठ उप महालेखाकार/सामाजिक और एल बी के लेखा अधिकार क्षेत्र के अधीन हैं।

पी आर आई और यू एल बी के कार्य:

73वें संविधान संशोधन 1993 में वर्णित और 11वीं अनुसूची (अनुच्छेद 243 जी) में सूचीबद्ध कार्यों के अनुसार, पंचायती राज संस्थाओं के 29 कार्य हैं और 74वें संविधान संशोधन 1993 और 12वीं अनुसूची में (अनुच्छेद 243 डब्ल्यू) सूचीबद्ध कार्यों के अनुसार यू एल बी के लिए 18 कार्य हैं। उपरोक्त परिकल्पित कार्यों में क्रमशः 2006 एवं 2009 में उत्तराखण्ड सरकार ने राज्य की पंचायतीराज संस्थाओं के तीन सोपानों को केवल 14 कार्य तथा नगरीय स्थानीय संस्थाओं को 13 कार्य हस्तान्तरित किए।

कार्यकर्ताएँ:

पी आर आई और यू एल बी को प्रदत्त प्रकार्यों से संबंधित कार्यकर्ताओं को अभी तक उत्तराखण्ड की पंचायती राज संस्थाओं और नगरीय स्थानीय संस्थाओं के तीनों सोपानों को हस्तान्तरित नहीं किया गया था। तथापि, इन कार्यों से संबंधित सरकारी आदेशों को पहले ही, राज्य सरकार के संबंधित विभाग द्वारा निर्गमित किया जा चुका है।

लेखाकरण, लेखापरीक्षा कार्य और प्रतिवेदन कार्य की व्यवस्था:

स्थानीय निकायों द्वारा बजट एवं लेखाओं के रखरखाव तैयार करने के लिए, पूरे भारत में एकरूपण, बजट तथा लेखाकरण फार्मेट भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (नि म ले प) द्वारा निर्धारित किया गया है इसका उद्देश्य पूरे भारत में स्थानीय निकाय लेखाओं को एकरूपता प्रदान करना है। वर्ष 2005 में राज्य सरकार ने इन सभी फार्मेटों को पी आर आई-ओं तथा यू एल बी-यों के लिए अपना लिया है। पी आर आई-यों तथा यू एल बी-यों जो मुख्यतः संघ या राज्य सरकारों की समेकित निधियों से वित्तीय हैं, की लेखापरीक्षा, नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के (कर्तव्य, शक्तियाँ तथा सेवा शर्तों) अधिनियम, 1971 जहाँ भी लागू हो, की धारा 14 के अन्तर्गत, नि म ले प द्वारा संपादित है। राज्य सरकार ने भी पी आर आई-यों तथा यू एल बी-यों की लेखापरीक्षा, नि म ले प (क श से) अधिनियम, 1971 की धारा 20(1) के अधीन तकनीकी निर्देशन व आधार व्यवस्थाओं के अन्तर्गत नि म ले प को सौंपा है। तदनुसार, जो पी आर आई-यां तथा यू एल बी-यां नि म ले प के (क श से)

अधिनियम, 1971 की धारा 14 के कार्यक्षेत्र में नहीं आते उनकी लेखापरीक्षा, निमलेप (क श से) अधिनियम, 1971 की धारा 20(1) के अधीन की जाती है। इस प्रकार की लेखापरीक्षा सम्पादन से उत्पन्न लेखापरीक्षा निष्कर्षों को लेखापरीक्षा एवं लेखा विनियम, 2007 के नियम 155 के अधीन वार्षिक तकनीकी निरीक्षण प्रतिवेदन के रूप में राज्य सरकार को सूचित किया जाता है।

1.7 व्यय की गुणवत्ता

राज्य में बेहतर सामाजिक एवं भौतिक अवसंरचना की उपलब्धता सामान्यतया उसके व्यय की गुणवत्ता को दर्शाती है। व्यय की गुणवत्ता में सुधार मूलतः तीन पहलुओं को समाहित करता है यथा, व्यय की पर्याप्तता (जैसे लोक सेवायें उपलब्ध कराने हेतु पर्याप्त प्रावधान); किये गये व्यय की दक्षता और प्रभावकारिता (चयनित सेवाओं हेतु परिव्यय परिणाम सम्बन्धों का निर्धारण)।

1.7.1 लोक व्यय की पर्याप्तता

तालिका 1.16 चालू वर्ष के दौरान विकासपरक व्यय, सामाजिक क्षेत्र व्यय और पूँजीगत व्यय के सापेक्ष राज्य सरकार की राजकोषीय प्राथमिकता को विश्लेषित करती है।

तालिका-1.16

2008-09 और 2012-13 के दौरान राज्य की राजकोषीय प्राथमिकता

राज्य द्वारा राजकोषीय प्राथमिकता	स व्य/स रा घ उ	वि व्य #/स व्य	सा क्षे व्य/स व्य	पूँ व्य/स व्य
उत्तराखण्ड का औसत (अनुपात) 2008-09	18.80	66.21	34.87	19.14
उत्तराखण्ड का औसत (अनुपात) 2012-13	16.41	66.25	38.32	19.93
स व्य : सकल व्यय, वि व्य : विकासपरक व्यय, सा क्षे व्य : सामाजिक क्षेत्र में व्यय # विकासपरक व्यय में विकासपरक राजस्व व्यय, विकासपरक पूँजीगत व्यय और वितरित ऋण एवं अग्रिम शामिल है। स्रोत: (1) स रा घ उ के लिए सूचना राज्य के अर्थ एवं संख्या निदेशालय से एकत्र की गयी थी। (परिशिष्ट-1.2 भाग अ)				

राजकोषीय प्राथमिकता राज्य द्वारा श्रेणी विशेष के व्यय को दी गई प्राथमिकता को इंगित करती है। 2008-09 के सापेक्ष 2012-13 में व्यय पद्धति के तुलनात्मक अध्ययन पर पाया गया कि:

- सरकार का सकल व्यय स रा घ उ के अनुपात के रूप में 2008-09 से 2012-13 में 2.39 प्रतिशत निम्नतर था।
- सकल व्यय के अनुपात के रूप में विकासपरक व्यय (वि व्य) वर्ष 2008-09 एवं 2012-13 के दौरान समान था।
- सकल व्यय के अनुपात में सामाजिक क्षेत्र व्यय लगभग 3.45 प्रतिशत उच्च था।
- यद्यपि पूँजीगत व्यय चालू वर्ष के दौरान 52.87 प्रतिशत बढ़ा, लेकिन पूँजीगत व्यय का कुल व्यय में अनुपात अपरिवर्तित रहा।

1.7.2 व्यय करने की दक्षता

सामाजिक और आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से विकास मर्दों पर लोक व्यय के महत्व के परिप्रेक्ष्य में, राज्य सरकार के लिए उचित व्यय औचित्यपूर्ण कदम उठाना तथा कोर पब्लिक एवं मेरिट गुड्स⁵ के

⁵ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

प्रावधान पर जोर देना महत्वपूर्ण है। विकासपरक व्यय⁶ हेतु आवंटन में सुधार के अतिरिक्त, आसन्न वर्षों में विशेषकर ऋण सेवाओं में गिरावट के कारण उत्पन्न राजकोषीय अन्तराल के मद्देनजर, किये हुए व्यय की दक्षता पूँजीगत व्यय के कुल व्यय से अनुपात (और/अथवा स रा घ उ) एवं विद्यमान सामाजिक एवं आर्थिक सेवाओं के परिचालन एवं रखरखाव पर होने वाले राजस्व व्यय के समानुपात से भी परिलक्षित होता है। कुल व्यय (और/अथवा स रा घ उ) में इन घटकों का अनुपात जितना उच्चतर होगा, उतना ही व्यय की गुणवत्ता को बेहतर करेगा। जहाँ, एक ओर तालिका 1.17 चालू वर्ष व गत वर्ष के दौरान बजटीय आवंटन की तुलना में राज्य के समग्र व्यय से सम्बन्धित विकास व्यय की प्रवृत्तियों को दर्शाती है, वहीं तालिका 1.18, चयनित सामाजिक और आर्थिक सेवाओं के रखरखाव पर किए गये पूँजीगत व्यय तथा राजस्व व्यय के घटकों का विवरण प्रस्तुत करती है।

कुल व्यय में विकासपरक राजस्व व्यय के अंश ने वर्ष 2008-13 की अवधि के दौरान 50 प्रतिशत की औसत दर पर अन्तर्वर्षीय विविधता दर्शायी। वर्ष 2012-13 के दौरान यह विगत वर्ष की तुलना में मामूली 0.37 प्रतिशत कम रहा। विकासपरक पूँजीगत व्यय की अंश ने भी अन्तर्वर्षीय विविधता प्रदर्शित की लेकिन 2009-10 से आगे तक बढ़ोतरी का रुझान लगातार दर्शाया। यह 2011-12 की तुलना में 2012-13 में 52 प्रतिशत तक बढ़ गया। 2008-09 से 2012-13 तक विकासपरक व्यय में समग्र वृद्धि 69 प्रतिशत थी।

तालिका-1.17

विकासपरक व्यय

(₹ करोड़ में)

विकासपरक व्यय के घटक	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	
					ब आ	वास्तविक
विकासपरक व्यय (अ से स)	6,973 (66)	8,205 (66)	8,842 (65)	10,607 (68)	13,201 (67)	11,776 (66)
अ. विकासपरक राजस्व व्यय	5,015 (48)	6,638 (54)	7,033 (52)	8,121 (52)	9,425 (48)	8,091 (45)
ब. विकासपरक पूँजीगत व्यय	1,842 (17)	1,538 (12)	1,750 (13)	2,240 (14)	3,514 (18)	3,413 (19)
स. विकासपरक ऋण एवं अग्रिम	116 (1)	29 (0.23)	59 (0.44)	246 (2)	262 (1)	272 (2)

कोष्ठक के आँकड़े समग्र व्यय के प्रतिशत को इंगित करते हैं।

तालिका-1.18

चयनित सामाजिक और आर्थिक सेवाओं में किये गये व्यय की दक्षता

(प्रतिशत में)

सामाजिक/आर्थिक अवसंरचना	2011-12			2012-13		
	कु व्य पर पूँ व्य का अनुपात	रा व्य में अंश वे एवं पा	परि एवं मर	कु व्य पर पूँ व्य का अनुपात	रा व्य में अंश वे एवं पा	परि एवं मर
सामाजिक सेवाएँ (सा से) मुख्य घटकों पर व्यय						
सामान्य शिक्षा	0.73	19.99	0.003	1.04	19.19	0.004
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण	0.60	3.91	0.027	0.78	4.02	0.039
जलापूर्ति, स्वच्छता और आवासीय एवं शहरी विकास	0.76	0.04	0.010	1.51	0.045	0.012
सा से पर कुल व्यय	2.37	25.00	0.06	4.02	24.42	0.066

⁶ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

आर्थिक सेवाएँ (आ से) मुख्य घटकों पर व्यय						
कृषि एवं संबद्ध क्रिया कलाप	1.67	3.37	0.13	3.05	3.58	0.230
सिंचाई एवं बाढ़ नियन्त्रण	2.93	1.54	0.19	2.18	1.53	0.244
विद्युत एवं ऊर्जा	0.27	--	--	2.90	--	--
परिवहन	5.52	0.10	0.55	5.45	0.099	0.541
आ से पर कुल व्यय	12.03	6.41	0.89	15.18	6.56	1.015
सा से + आ से पर कुल व्यय	14.41	31.41	0.94	19.20	30.98	1.081

कु व्य: कुल व्यय, पू व्य: पूँजीगत व्यय, रा व्य: राजस्व व्यय, वे एवं पा: वेतन एवं पारिश्रमिक, परि एवं मर: परिचालन एवं मरम्मत।

यद्यपि, पूँजीगत व्यय के प्राथमिकीकरण से सम्बन्धित कोई विशेष मापदण्ड एफ आर बी एम अधिनियम में निर्धारित नहीं किये गये हैं, लेकिन राज्य सरकार ने वर्ष 2012-13 के बजट के साथ राज्य विधानमण्डल में प्रस्तुत अपने एम टी एफ पी एस में तेरहवें वित्त आयोग की संस्तुतियों के प्रति वचनबद्धता दर्शायी है जिनमें स्पष्ट है कि वर्ष 2012-13 में राजकोषीय घाटा स रा घ उ का 3.5 प्रतिशत होगा और वर्ष 2013-14 तक इसे कम करके तीन प्रतिशत लाया जाएगा। इसके लिए राज्य सरकार उधार कम लेगी तथा निकट भविष्य में पूँजीकरण हेतु निधियाँ कम होंगी। तथापि चालू वित्त वर्ष में सरकार ने वर्ष 2011-12 की तुलना में 53 प्रतिशत अधिक निधियों के पूँजीकरण की व्यवस्था की।

वर्ष 2012-13 के दौरान, राजस्व व्यय के प्रतिशत के रूप में वेतन तथा पारिश्रमिक सामाजिक और आर्थिक सेवाओं पर लगभग स्थिर बना रहा। राजस्व व्यय के प्रतिशत के रूप में परिचालन एवं मरम्मत व्यय चालू वर्ष के दौरान आर्थिक सेवाओं में मूल्यवर्द्धित हुआ।

1.8 सरकारी व्यय एवं निवेशों का विश्लेषण

एफ आर बी एम ढाँचे के उपरान्त राज्य से न केवल अपने राजकोषीय घाटे (व उधार) को निम्न स्तर पर रखने वरन् अपने पूँजीगत ऋण एवं अग्रिम सहित व्यय और निवेश की जरूरतों को वहन करने की भी अपेक्षा की जाती है। इसके अतिरिक्त बाजार आधारित संसाधनों पर पूर्ण निर्भर होने के क्रम में, राज्य सरकार को अपने निवेशों पर पर्याप्त प्रतिफल अर्जित करने एवं ऋण से प्राप्त निधियों की लागत को अप्रत्यक्ष उपदान के रूप में अपने बजट से वहन करने के बजाय वसूल किये जाने तथा वित्तीय परिचालनों में पारदर्शिता प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। यह खण्ड, पूर्व वर्षों के सापेक्ष चालू वर्ष के दौरान सरकार द्वारा किये गये निवेशों एवं अन्य पूँजीगत व्यय का मोटे तौर पर वित्तीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1.8.1 अपूर्ण परियोजनाएँ

31 मार्च 2013 को विभागवार अपूर्ण परियोजनाओं सम्बन्धी सूचना तालिका 1.19 में दी गयी है।

तालिका-1.19
अपूर्ण परियोजनाओं का विभागवार विवरण

(₹ करोड़ में)

विभाग	अपूर्ण परियोजनाओं की संख्या	प्रारम्भिक बजटीय लागत	*परियोजनाओं की पुनरीक्षित कुल लागत	पुनरीक्षित आगणन में लागत वृद्धि	31 मार्च 2013 को संचयी वास्तविक व्यय
लोक निर्माण विभाग	188	500.03	503.54	3.51	86.55
ग्रामीण अभियंत्रण सेवाएँ	04	17.47	--	--	8.39
योग	192	517.50	503.54	3.51	94.94

* राज्य सरकार द्वारा 31.03.2013 तक किये गये अन्तिम पुनरीक्षण के अनुसार परियोजनाओं की पुनरीक्षित कुल लागत को इंगित करता है।

स्रोत: वित्त लेख

1.8.2 निवेश एवं प्रतिफल

31 मार्च 2013 को, सांविधिक निगमों, ग्रामीण बैंकों, संयुक्त स्टॉक कम्पनियों तथा सहकारी संस्थाओं (तालिका 1.20) में उत्तराखण्ड सरकार के निवेश पर औसत प्रतिफल नगण्य था अर्थात् पिछले 3 सालों के निवेश के एक प्रतिशत से भी कम, जबकि सरकार ने वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 के दौरान ऋणों पर 7.81 प्रतिशत औसत दर पर ब्याज दिया।

तालिका-1.20
निवेश पर प्रतिफल

निवेश/प्रतिफल/ऋणों की लागत	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
वर्ष के अन्त तक निवेश (₹ करोड़ में)	1,071	1,240	1,296	1,338	1,858
प्रतिफल लाभांश/व्यय (₹ करोड़ में)	0.23	0.07	0.21	0.05	0.19
प्रतिफल (प्रतिशत)	0.02	0.01	0.02	*7	0.01
सरकारी ऋण पर ब्याज की औसत दर (प्रतिशत)	7.75	7.64	7.34	7.83	8.50
ब्याज दर और प्रतिफल के बीच अन्तर (प्रतिशत)	7.73	7.63	7.32	7.83	8.49

स्रोत: वित्त लेखे

निवेश एवं प्रतिफल पर इस संदर्भ में, राज्य सरकार द्वारा कोई मानक निर्धारित नहीं किये गये हैं। इस प्रकार, मानक तैयार करने तथा कम वित्तीय परन्तु उच्च सामाजिक-आर्थिक लाभ से जुड़ी परियोजनाओं को चिन्हित करने की आवश्यकता है।

मुख्य लाभार्थी - (i) उत्तराखण्ड पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (₹ 967 करोड़) और (ii) उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम लिमिटेड (₹ 600 करोड़) थे। उत्तराखण्ड पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने ₹ 1,948 करोड़ की हानि तथा उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम लिमिटेड ने ₹ 226 करोड़ का लाभ वर्ष 2011-12 के अन्तिमीकृत लेखे के अनुसार संचित किया था।

1.8.3 विभागीय प्रबन्धित वाणिज्यिक उपक्रम

अर्द्ध-वाणिज्यिक प्रकृति के क्रियाकलाप भी कतिपय सरकारी विभागों के विभागीय प्रबन्धित उपक्रमों द्वारा भी निष्पादित किये जाते हैं। सरकार द्वारा किए गए निवेशों की उस वर्ष तक जिस वर्ष तक के प्रोफार्मा लेखे तैयार कर लिए गए हैं, विभागवार स्थिति, निवल लाभ/हानि के साथ-साथ इन उपक्रमों में निवेशित पूँजी का प्रतिफल परिशिष्ट-1.6 में दिया गया है। तीन कम्पनियों के अन्तिम लेखाओं की जाँच में यह पाया गया था कि:

- राज्य सरकार द्वारा सरकारी सिंचाई कार्यशाला, रूडकी में ₹ 1.89 करोड़ का निवेश, उस वित्तीय वर्ष के अन्त तक किया गया था, जब तक उसके लेखे तैयार (2009-10) कर लिए गये थे।
- कुल तीन उपक्रमों, अर्थात् सिंचाई कार्यशाला, रूडकी, आर एफ सी, हल्द्वानी तथा आर एफ सी, देहरादून, में से केवल सिंचाई कार्यशाला के 2009-10 तक के लेखे तैयार थे। वर्ष 2007-08 तक यह लाभार्जन का उपक्रम था, परन्तु तत्पश्चात शुद्ध हानि दर्ज की गयी। अन्तिमीकृत लेखे के अनुसार, इन तीन विभागीय उपक्रमों की कुल संचित हानि ₹ 36 करोड़ थी।
- वर्ष 2012-13 के दौरान इन विभागीय उपक्रमों द्वारा कोई भी लेखा अन्तिम नहीं किया गया।

⁷ गणना योग्य नहीं।

1.8.4 राज्य सरकार द्वारा ऋण एवं अग्रिम

सहकारी समितियों, निगमों तथा कम्पनियों में निवेशों के अतिरिक्त, सरकार इन संस्थाओं/संगठनों में से अनेक को ऋण एवं अग्रिम राशि भी उपलब्ध कराती रही है। तालिका-1.21 31 मार्च 2013 को, बकाया ऋण एवं अग्रिमों, पिछले तीन वर्षों के दौरान ब्याज भुगतान के सापेक्ष ब्याज प्राप्ति को दर्शाती है।

तालिका-1.21
राज्य सरकार द्वारा दिये गये ऋणों पर प्राप्त औसत ब्याज (₹ करोड़ में)

ऋण/ब्याज प्राप्ति/ऋण की लागत की मात्रा	2010-11	2011-12	2012-13	
			ब आ	वास्तविक आँकड़े
प्रारम्भिक शेष	743.09	717.90	--	874.08
वर्ष के दौरान दी गयी अग्रिम राशि	59.68	246.83	264.05	272.57
वर्ष के दौरान पुनर्भुगतान की गई राशि	84.87	90.65	118.18	428.44
अंतिम शेष	717.90	874.08		718.21
निवल वृद्धि	(-) 25.19	(+) 156.18		(-)155.87
ब्याज प्राप्ति	7.98	0.62		1.61
बकाया ऋणों एवं अग्रिम पर ब्याज प्राप्ति प्रतिशत के रूप में	1.11	0.07		0.22
राज्य सरकार के अदत्त राजकोषीय दायित्वों के प्रतिशत के रूप में ब्याज भुगतान	6.85	7.49		8.18
ब्याज भुगतान और ब्याज प्राप्ति के बीच अंतर (प्रतिशत)	5.74	7.42		7.96
अदत्त बकाया, जिनकी शर्तें नियत की जा चुकी हैं	राज्य सरकार द्वारा सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई			

स्रोत: वित्त लेखे व वार्षिक वित्त विवरण (उत्तराखण्ड सरकार)

सरकार ने वर्ष 2011-12 के ₹ 247 करोड़ के विरुद्ध वर्ष 2012-13 के दौरान ₹ 273 करोड़ ऋण दिये, जो कि पिछले वर्ष से ₹ 26 करोड़ अधिक थे। मुख्य रूप से ऊर्जा क्षेत्र में पुनर्भुगतान (₹ 422 करोड़) के कारण ऋणों एवं अग्रिमों की वसूलियों ने पिछले वर्ष की तुलना में ₹ 338 करोड़ की बढ़ोतरी दिखाई दी।

बकाया ऋणों एवं अग्रिम ब्याज के रूप में ब्याज प्राप्ति ने चालू वर्ष के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ी सी वृद्धि दर्शायी। वर्ष 2012-13 के दौरान राज्य सरकार द्वारा उठाये गये बाजार ऋणों की औसत ब्याज दर 8.87 प्रतिशत थी, जबकि राज्य सरकार द्वारा, विभिन्न संस्थाओं, निगमों/सरकारी कम्पनियों और सरकारी कर्मचारियों आदि को दिये गये ऋणों और अग्रिमों पर ब्याज की दर केवल 0.22 प्रतिशत थी, जो कि वर्ष 2009-10 में बारहवें वित्त आयोग द्वारा निर्धारित सात प्रतिशत के लक्ष्य के सापेक्ष थी।

बारहवें वित्त आयोग ने संस्तुति दी कि बकाया पड़े ऋणों एवं अग्रिमों पर कम से कम सात प्रतिशत प्रतिफल पूर्वानुमानित अवधि के अन्तिम वर्ष (2009-10) तक श्रेणीबद्ध ढंग से प्राप्त किया जाना चाहिए, जिस लक्ष्य को राज्य सरकार वर्ष 2012-13 में भी प्राप्त नहीं कर पायी। 31 मार्च 2013 तक सरकार द्वारा दिये गये कुल ऋण ₹ 718 करोड़ थे। मुख्य लाभार्थी कृषि (₹ 451 करोड़), परिवहन (₹ 125 करोड़) एवं ऊर्जा (₹ 77 करोड़) क्षेत्र थे।

1.8.5 रोकड़ शेष और रोकड़ शेषों का निवेश

तालिका 1.22 वर्ष के दौरान रोकड़ शेषों तथा राज्य सरकार द्वारा रोकड़ शेषों से किये गये निवेश को इंगित करती है।

तालिका-1.22

रोकड़ शेष और रोकड़ शेष से किया गया निवेश

(₹ करोड़ में)

विवरण	1 अप्रैल 2012 को	31 मार्च 2013 को
सामान्य रोकड़ शेष		
कोषागारों और स्थानीय प्रेषणों में रोकड़	(-) 5.38	00
रिजर्व बैंक में जमा	116.01	(-) 5.21
अन्य बैंकों में जमा (ब)	00	00
योग	110.63	(-) 5.21
रोकड़ शेष निवेश लेखे में रखा निवेश	50.21	875.15
योग (अ)	160.84	869.94
(ब) अन्य रोकड़ शेष और निवेश		
विभागीय अधिकारियों जैसे लोक निर्माण विभाग अधिकारियों, वन विभाग अधिकारियों, जिला कलेक्टरों के पास रोकड़	(-) 2.15	(-) 2.15
आकस्मिक व्यय हेतु विभागीय अधिकारियों के पास स्थायी अग्रिम	(-) 0.87	(-) 0.87
उद्दिष्ट निधियों का निवेश	927.36	1,078.62
योग (ब)	924.34	1,075.60
महायोग (अ) + (ब)	1,085.18	1,945.54

स्रोत: वित्त लेखे

अन्तिम रोकड़ शेष गत वर्ष (₹ 1,085.18 करोड़) की अपेक्षा चालू वर्ष (₹ 1,945.54 करोड़) के अन्त में ₹ 860.36 करोड़ बढ़ गया।

राज्य सरकार ने रोकड़ शेष से ₹ 1,078.62 करोड़ की नैमित्तिक निधि सृजित की। यही राशि नैमित्तिक निधि से भारत सरकार की प्रतिभूतियों में निवेशित की गई तथा वर्ष 2012-13 के दौरान ₹ 32.15 करोड़ का ब्याज अर्जित किया। वर्ष 2012-13 के दौरान रोकड़ शेष पर प्राप्त ब्याज 1.65 प्रतिशत था जबकि सरकार ने वर्ष के दौरान अपनी उधार राशियों पर 8.18 प्रतिशत की औसत दर से ब्याज का भुगतान किया। राज्य सरकार ने ओवरड्राफ्ट सुविधा का लाभ नहीं लिया और वर्ष 2012-13 के दौरान अधिकतम दिनों के लिए ₹ 0.16 करोड़ का न्यूनतम शेष बनाये रखने में समर्थ थी। तथापि, वर्ष के दौरान रोकड़ प्रवाह में अस्थायी शेष ने सरकार को दो (साधारण और विशेष) अवसरों पर अर्थोपाय अग्रिम को प्राप्त करने के लिए मजबूर किया। वर्ष 2012-13 के दौरान राज्य को ₹ 0.01 करोड़ अर्थोपाय अग्रिम पर ब्याज के रूप में देना पड़ा।

वित्तीय वर्ष 2012-13 के अंत में मुख्य शीर्ष 'चैको और बिलों' के नीचे लघुशीर्ष 'कोषालय चैक' के अधीन ₹ 44.27 करोड़ क्रेडिट शेष पड़ा था।

पर्याप्त रोकड़ शेष, ₹ 1,787 करोड़ के राजस्व आधिक्य और निम्न राजकोषीय घाटे, जो स रा घ उ का 1.48 प्रतिशत था, के फलस्वरूप खुले बाजार की उधारियों को बजट के ₹ 2,400 करोड़ के लक्ष्य को ₹ 1,750 करोड़ तक रोका जा सका ।

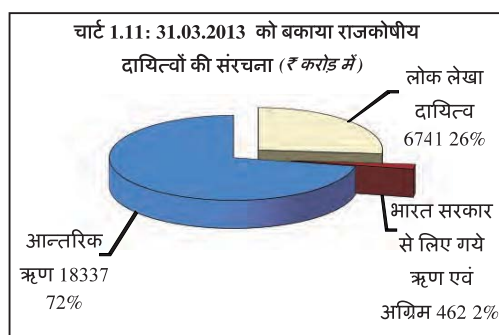
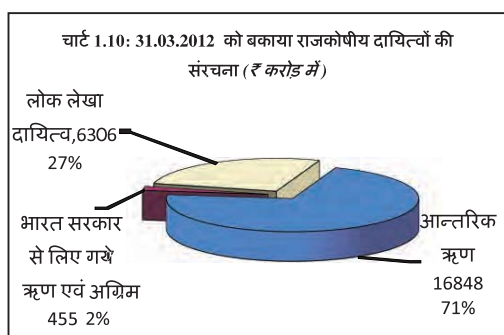
1.9 परिसम्पत्तियाँ एवं दायित्व

1.9.1 परिसम्पत्तियाँ एवं दायित्व की संरचना एवं वृद्धि

विद्यमान सरकारी लेखापद्धति में, सरकारी स्वामित्व वाली अचल परिसम्पत्तियों, जैसे भूमि एवं भवनों का विस्तृत लेखाकरण नहीं किया है। तथापि, सरकारी लेखे, सरकार के वित्तीय दायित्वों तथा किये गये व्यय द्वारा सृजित परिसम्पत्तियों को समाहित करते हैं। परिशिष्ट-1.4 (भाग-ब) में 31 मार्च 2012 की समतुल्य स्थिति की तुलना में 31 मार्च 2013 को ऐसे दायित्वों एवं परिसम्पत्तियों का सार दिया गया है। इस परिशिष्ट में दायित्वों में मुख्यतः आन्तरिक ऋण एवं भारत सरकार से ऋण एवं अग्रिम, लोक लेखे एवं आरक्षित निधि से प्राप्तियाँ सम्मिलित हैं तथा परिसम्पत्तियों में मुख्यतः पूँजीगत परिव्यय तथा राज्य सरकार द्वारा दिये गये ऋण एवं अग्रिम तथा नकद शेष सम्मिलित हैं।

1.9.2 राजकोषीय दायित्व

राज्य के बकाया पड़े राजकोषीय दायित्व की प्रवृत्तियों को परिशिष्ट-1.3, परिशिष्ट-1.4 व राज्य वित्त लेखे के विवरण 6 में प्रस्तुत किया गया है तथापि, पिछले वर्ष के सापेक्ष वर्तमान वर्ष के दौरान राजकोषीय दायित्वों की संरचना चार्ट 1.10 और 1.11 में प्रस्तुत की गई है।



वर्ष 2012-13 का ऋण- स रा घ उ अनुपात (23.57 प्रतिशत), पिछले वर्ष की तुलना में (25.07 प्रतिशत) 1.5 प्रतिशत सुधरा। यह अनुपात तेरहवें वित्त आयोग के उस वर्ष के लिए, निर्धारित मापदण्ड (40.00 प्रतिशत) से नीचे था। समग्र राजकोषीय दायित्व वर्ष 2008-09 के ₹ 16,276 करोड़ से 56.92 प्रतिशत बढ़कर वर्ष 2012-13 में ₹ 25,540 करोड़ हो गये थे। राज्य की देयताएँ जो वर्ष 2012-13 के अन्त में ₹ 25,540 करोड़ की थी, में मुख्य रूप से लोक ऋण (₹ 18,799 करोड़), लघु बचत एवं भविष्य निधि (₹ 4,720 करोड़) और अन्य दायित्व (₹ 2,021 करोड़) शामिल थे। पिछले वर्ष की तुलना में चालू वर्ष की समाप्ति पर राजकोषीय दायित्वों में वृद्धि मुख्यतः आन्तरिक ऋण तथा लघु बचत एवं भविष्य निधि आदि के कारण थी, जो क्रमशः ₹ 1,489 करोड़ एवं ₹ 271 करोड़ तक बढ़ गये थे। राजकोषीय देयताओं में वृद्धि विभिन्न वर्षों में कम बढ़ी, पिछले वर्ष 2011-12 की तुलना में वर्ष 2012-13 में यह 8.18 प्रतिशत बढ़ी। वर्ष के दौरान स रा घ उ के सापेक्ष इन दायित्वों में

उत्प्लावकता 0.54 थी, जो यह इंगित करती थी कि स रा घ उ में प्रत्येक प्रतिशत बिन्दु के लिए राजकोषीय दायित्व 0.54 प्रतिशत बढ़ गये थे। ये दायित्व राज्य की राजस्व प्राप्तियों का 1.62 गुना एवं अपने संसाधनों का 3.19 गुना थे। राज्य में प्रारम्भ से ही खुले बाजार ऋणों की भुगतान वापसी के लिए सिंकिंग फण्ड चलन में है (सितम्बर 2006 में पुनरीक्षित) और राज्य सरकार को पिछले वर्ष के बकाया पड़े बाजार ऋणों के 0.50 प्रतिशत की दर से अंशदान करना है। राज्य सरकार ने इस निधि में ₹ 150 करोड़ का योगदान वर्ष के दौरान किया।

1.9.3 आरक्षित निधियों के अधीन लेन-देन

31 मार्च 2013 को आरक्षित निधियों में अन्तिम शेष के रूप में ₹ 1,228.09 करोड़ (जमा) थे। इसमें से बिना ब्याज वाली आरक्षित निधियों में ₹ 1,191.23 करोड़ (जमा) तथा ब्याज वाली आरक्षित निधियों में ₹ 36.86 करोड़ (जमा) थे। इसमें, संचालित होने वाले लेखों के मुख्य शीर्ष 8115-मूल्य ह्रास/नवीनीकरण आरक्षित निधि (₹ 0.01 करोड़) और 8121-सामान्य और अन्य आरक्षित निधियाँ (₹ 36.85 करोड़) थे जिसके अन्तर्गत राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि का गठन किया गया। बिना ब्याज वाली (₹ 1191.23 करोड़) (जमा), आरक्षित निधियों के अन्तर्गत लेखाशीर्ष 8222-सिंकिंग फण्ड (₹ 1128 करोड़), 8229- विकास एवं कल्याण निधियाँ (₹ 38.23 करोड़) और 8235- सामान्य एवं आरक्षित निधियाँ (25 करोड़) का संचालन किया गया था।

समेकित सिंकिंग फंड: बारहवें वित्त आयोग की संस्तुतियों के अनुसार कुल बकाया दायित्वों (आंतरिक ऋण और राज्य सरकार के लोक लेखा दायित्वों) का बोझ कम करने के लिये राज्य सरकार ने सिंकिंग फण्ड 2006 के सृजन एवं प्रशासन के लिए एक पुनरीक्षित योजना बनाई। आर बी आई द्वारा मार्गदर्शन/निर्देशों के अधीन, जो कि सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये जाये, निधियों का संचालन किया जाता है। सरकार द्वारा आर आई बी को इन निधियों पर अर्जित लाभांश के एक प्रतिशत का 1/8 प्रतिशत या परस्पर सहमति के आधार पर तय कमीशन के रूप में दिया जाता है। वर्ष 2012-13 में ₹ 150 करोड़ राज्य की समेकित निधि से सिंकिंग फंड में विनियोजित किये गये, जो कि 31 मार्च 2013 को अदत्त दायित्वों (₹ 25,539.88 करोड़) की आवश्यकता का 0.5 प्रतिशत (₹ 128 करोड़) है। 2012-13 के अन्त में इसमें कुल संचयन ₹ 1,128 करोड़ था। निधियों के कुल संचयन में से ₹ 1,053.62 करोड़ आर बी आई द्वारा निवेश किया गया ।

राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि(एस.डी.आर.एफ.):

तेरहवें वित्त आयोग की संस्तुतियों के आधार पर आपदा राहत कोष, जो राज्य में संचालन में था, को राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि के द्वारा बदल दिया गया है। निधियों के दिशा निर्देशों के अनुसार केन्द्र एवं विशेष श्रेणी के राज्यों जैसे कि उत्तराखण्ड को 90:10 के अनुपात में योगदान देना आवश्यक है।

वर्ष 2012-13 के आरंभ में इस निधि में ₹ 41.72 करोड़ शेष थे। वर्ष 2012-13 के दौरान राशि ₹ 129.72 करोड़ (90 प्रतिशत केन्द्र अंश ₹ 116.75 करोड़ एवं 10 प्रतिशत राज्य का अंश ₹ 12.97 करोड़) भारत एवं उत्तराखण्ड राज्य की समेकित निधियों से एस डी आर एफ में विनियोजित किये गये इसके विरुद्ध ₹ 134.59 करोड़ इस निधि से व्यय किये गये तथा ₹ 36.85 करोड़ वर्ष के अंत में शेष थे।

1.9.4 प्रत्याभूतियों की स्थिति-आकस्मिक दायित्व

प्रत्याभूतियाँ, उधार लेने वाले जिसके लिये प्रत्याभूति दी गयी है, के दोषी रहने पर राज्य की समेकित निधि पर आकस्मिक दायित्व हैं।

राज्य विधायिका द्वारा संविधान के अनुच्छेद 293 के अन्तर्गत उस अधिकतम सीमा के निर्धारणार्थ कोई भी कानून पारित नहीं किया गया, जिसके अन्तर्गत सरकार राज्य समेकित निधि की प्रतिभूति पर प्रत्याभूतियाँ दे सके।

एफ आर बी एम अधिनियम, 2005 में यह विहित है कि राज्य सरकार इस अधिनियम के प्रवृत्त होते समय विद्यमान, राज्य सरकार के किसी नियम या कानून के अन्तर्गत अथवा इस अधिनियम के प्रवृत्त होने के उपरान्त राज्य सरकार द्वारा बनाये जाने वाले किसी नियम या कानून द्वारा, निर्धारित सीमा से अधिक राशि पर प्रत्याभूति नहीं देगी। तथापि, प्रत्याभूतियों की सीमा तय करने के लिए राज्य सरकार ने अभी तक कोई कानून पारित नहीं किया है।

वित्त लेख के विवरण संख्या 9 के अनुसार, अधिकतम राशि जिसके लिए राज्य द्वारा प्रत्याभूतियाँ दी गई थी तथा विगत तीन वर्षों में बकाया प्रत्याभूतियाँ तालिका-1.23 में दी गई है:

तालिका-1.23
उत्तराखण्ड सरकार द्वारा दी गई प्रत्याभूतियाँ (₹ करोड़ में)

प्रत्याभूतियाँ	2010-11	2011-12	2012-13
प्रत्याभूति की अधिकतम राशि	2,122	2,722	2,722
प्रत्याभूति की बकाया राशि	1,511	1,739	1,570
कुल राजस्व प्राप्तियों से प्रत्याभूति की अधिकतम राशि का प्रतिशत	18.28	19.88	17.29
एफ आर बी एम अधिनियम/कोई अन्य अधिनियम अथवा राज्य के आदेश के अनुसार मानदण्ड	एफ आर बी एम अधिनियम, 2005 के परिपालन में राज्य सरकार द्वारा कोई भी नियम नहीं बनाया गया है।		

स्रोत: वित्त लेख

31 मार्च 2013 को बकाया प्रत्याभूति की राशि (₹ 1,570 करोड़), प्राथमिक रूप से उर्जा क्षेत्र (₹ 1,041 करोड़), सहकारिताओं (₹ 500 करोड़) और अन्य संस्थाओं (₹ 29 करोड़) के विरुद्ध थी। प्रत्याभूति राजस्व प्राप्तियों के सापेक्ष प्रत्याभूतियों की अधिकतम राशि का प्रतिशत 2010-11 में 18.28 प्रतिशत से घटकर 2012-13 में 17.29 प्रतिशत हो गया। वर्ष के दौरान कोई भी प्रत्याभूति आव्हानित नहीं की गई।

राज्य सरकार ने प्रत्याभूति देने योग्य निर्धारित सीमाओं के लिए, एफ आर बी एम अधिनियम, 2005 के अनुसरण में, कोई नियम नहीं बनाये हैं। उपरोक्त की अनुपस्थिति में यह अभिनिश्चित नहीं किया जा सका कि सरकार द्वारा प्रदत्त प्रत्याभूति सीमाओं के दायरे में थी।

सरकार ने ₹ 25 करोड़ की प्रत्याभूति संग्रह उत्थित प्रत्याभूतियों के निपटान के लिए एक 'प्रत्याभूति विमोचन निधि' गठित किया है। वर्ष 2012-13 के दौरान उक्त निधि से न तो कोई धनराशि निकाली गई तथा न ही विनियोजित की गई।

1.10 ऋण प्रबंधन

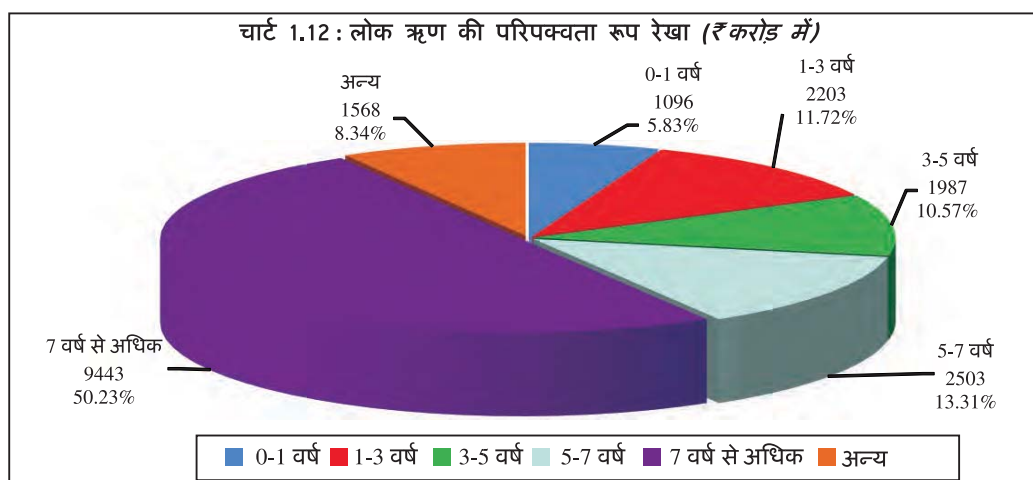
(i) ऋण रूपरेखा

राज्य के बकाया ऋणों एवं अग्रिमों (लोक ऋणों) की परिपक्वता रूपरेखा तालिका 1.24 एवं चार्ट 1.12 में दी गई है।

तालिका-1.24
लोक ऋण की परिपक्वता रूप रेखा

परिपक्वता रूपरेखा	राशि (₹ करोड़ में)	कुल लोक ऋण पर प्रतिशतता
0-1 वर्ष	1,096	5.83
1-3 वर्ष	2,203	11.72
3-5 वर्ष	1,987	10.57
5-7 वर्ष	2,503	13.31
7 वर्ष से अधिक	9,443	50.23
अन्य (राज्य सरकार द्वारा सूचना उपलब्ध नहीं करायी गयी)	1,568	8.34
योग	18,800	100

स्रोत: वित्त लेखे



स्रोत: वित्त लेखे

वचनबद्ध व्यय-दायित्व के निर्वहन हेतु सरकार को और अधिक उधार लेना पड़ा चूँकि विगत पाँच वर्षों में किसी भी वर्ष में राजकोषीय आधिक्य उपलब्ध नहीं था। 31 मार्च 2013 को लोक ऋण के बकाया स्टॉक की परिपक्वता रूप रेखा दर्शाती है कि 50.23 प्रतिशत लोक ऋण सात वर्षों या अधिक की परिपक्वता में था।

(ii) ऋण वहन क्षमता

राज्य सरकार के ऋणों के विस्तार के अलावा राज्य की ऋण वहन क्षमता को निर्धारित करने वाले विभिन्न सूचकों का विश्लेषण किया जाना महत्वपूर्ण है। यह खण्ड, ऋण स्थिरीकरण, ऋणोत्तर प्राप्ति

की पर्याप्तता, उधार ली गई निधियों की निवल उपलब्धता, ब्याज भुगतानों का भार (राजस्व प्राप्तियों से ब्याज भुगतानों के अनुपात द्वारा मापित) और राज्य सरकार की प्रतिभूतियों की परिपक्वता रूपरेखा के संदर्भ में राज्य सरकार की ऋण वहन क्षमता का आकलन करता है। तालिका 1.25 वर्ष 2010-11 से आरम्भ करते हुए तीन वर्षों की अवधि हेतु इन सूचकों के अनुसार राज्य की ऋण वहन क्षमता का विश्लेषण करती है।

तालिका-1.25
ऋण वहन क्षमता : सूचक एवं प्रवृत्तियाँ (₹ करोड़ में)

ऋण वहन क्षमता के सूचक ⁸	2010-11	2011-12	2012-13
ऋण स्थायित्विकरण ⁹ (मात्रात्मक विस्तार + प्राथमिक घाटा)	(+) 1,592	(+) 1,811	(+) 2,164
ऋणोत्तर प्राप्तियों की पर्याप्तता (संसाधन अंतराल) ¹⁰	(+) 940	(+) 86	(+) 157
उधार ली गई निधियों की निवल उपलब्धता ¹¹	820	308	5
ब्याज/भुगतानों का भार (ब्याज भुगतान/रा प्रा अनुपात)	12.75	12.92	13.27

तालिका-1.25 की प्रवृत्तियाँ दर्शाती हैं कि वर्ष 2010-11 से 2012-13 के दौरान मात्रा विस्तार के साथ-साथ प्रारम्भिक घाटा न केवल धनात्मक था बल्कि उसने उच्चोन्मुखी प्रवृत्ति भी दर्शायी। वर्ष 2012-13 के अन्त में यह ₹ 2,164 करोड़ पर था। ऋण- स रा घ उ अनुपात जो वर्ष 2008-09 में 29.05 प्रतिशत था, चालू वर्ष के दौरान 23.57 प्रतिशत तक गिरावट आयी। उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में, ऋण- स रा घ उ अनुपात 23.57 प्रतिशत पर था, जो तेरहवें वित्त आयोग द्वारा वर्ष 2012-13 के लिए निर्धारित लक्ष्य (40 प्रतिशत) से अत्यधिक नीचे था।

ऋण स्थायित्व और इसकी वहन क्षमता का दूसरा सूचक, बढ़ते हुए ब्याज दायित्वों और बढ़ते हुए प्रारम्भिक व्यय को पूरा करने के लिए राज्य की बढ़ती हुई ऋणोत्तर प्राप्तियों की पर्याप्तता है। ऋण-वहन क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से सुविधाजनक बनाया जा सकता था यदि बढ़ती हुई ऋणोत्तर प्राप्तियाँ,¹² बढ़ते हुए ब्याज भार और बढ़ते हुए प्रारम्भिक व्यय को पूरा कर सकतीं। धनात्मक संसाधन अंतराल राज्य के ऋणों को संभालने की क्षमता को मजबूत करता है। तालिका 1.25 वर्ष 2010-13 की अवधि हेतु परिभाषित संसाधन अंतराल को इंगित करती है।

राज्य ने वर्ष 2010-11, 2011-12 और 2012-13 में धनात्मक संसाधन अंतराल का अनुभव किया, जो बदले में 2010-11 में राजस्व घाटे को लगभग शून्य (₹ 13 करोड़) तक नीचे ले आया तथा राज्य ने वर्ष 2011-12 और 2012-13 के दौरान क्रमशः ₹ 716 करोड़ और ₹ 1,787 करोड़ का राजस्व आधिक्य प्राप्त किया। वर्ष 2011-12 के दौरान राजकोषीय घाटा (₹ 1,757 करोड़) तर्कसंगत सीमा तक नीचे लाया गया था, जो चालू वर्ष के दौरान (स रा घ उ का 1.48 प्रतिशत) ₹ 1,600 करोड़ तक और नीचे आ गया।

ऋण शोधन वर्ष 2008-10 के दौरान उच्चतर स्तर पर रहा था तथा वर्ष 2010-11 में थोड़ा सुधरा (0.83) जिससे यह इंगित होता है कि इस अवधि के दौरान पुरानी ऋण देयताओं को समाप्त करने के लिए ऋण निधियों का बढ़-चढ़ कर प्रयोग किया जा रहा है (परिशिष्ट-1.3)। तथापि, वर्ष 2011-12 और 2012-13 के दौरान इसने उच्चोन्मुखी प्रवृत्ति दर्शाई। इसलिए चालू वर्ष के दौरान मूलधन एवं ब्याज को लौटाने

⁸ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

⁹ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

¹⁰ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

¹¹ परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

¹² परिशिष्ट 4.1 की शब्दावली का संदर्भ लें।

के पश्चात उधारी निधियों से, निधियों के पूँजीकरण/उत्पादक व्यय हेतु कोई निधि बाकी नहीं थी। तथापि, चालू वर्ष के दौरान आन्तरिक ऋण शोधन, नई ऋण प्राप्तियों का 48.18 प्रतिशत था; भारत सरकार के ऋणों में शोधन 82.48 प्रतिशत था जबकि अन्य देयताओं के प्रकरण में चुकौतियाँ नयी प्राप्तियों के 93.46 प्रतिशत थीं। यह प्रवृत्तियाँ इस तथ्य की ओर इंगित करती हैं कि सरकार का ध्यान पुरानी ऋण देयताओं की समाप्ति की ओर प्रतीत होता है।

1.10.1 बाजार ऋण

बाजार ऋण की स्थिति

तालिका 1.26 2008-13 की अवधि के लिए राज्य सरकार के बाजार ऋणों की स्थिति दर्शाता है।

तालिका -1.26					(₹ करोड़ में)	
वर्ष	1 अप्रैल के प्रारम्भिक अवशेष	वर्ष के दौरान प्राप्तियाँ	वर्ष के दौरान भुगतान	31 मार्च को अन्तिम अवशेष	वर्ष के दौरान वृद्धि (+) / कमी (-)	
					धनराशि	प्रतिशत
2008-09	5,000.94	1,010.69	126.53	5,885.10	884.16	17.68
2009-10	5,885.10	600.00	139.54	6,345.57	460.62	7.82
2010-11	6,345.53	991.52	102.00	7,235.05	889.52	14.02
2011-12	7,235.05	1,400.00	240.73	8,394.32	1,159.27	16.02
2012-13	8,394.32	1,750.00	949.87	9,194.45	800.13	9.53

स्रोत: संगत वर्ष के वित्त लेखों।

उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि उत्तराखण्ड सरकार ने 2008-09 से 2012-13 की अवधि के दौरान ₹ 5,752.21 करोड़ एवं ₹ 1,558.67 करोड़ क्रमशः ऋण लिया और पुनर्भुगतान किया। 2008-13 के दौरान पुनर्भुगतान राज्य सरकार के कुल ऋणों (₹ 5,752.21 करोड़) का 27.10 प्रतिशत था। इन ऋणों पर भुगतानित ब्याज 2008-09 में 7.61 प्रतिशत से 2012-13 में 8.45 प्रतिशत की औसत दर से वर्ष 2008-09 में ₹ 414 करोड़ से बढ़कर 2012-13 में ₹ 743 करोड़ हो गया। पुनर्भुगतान की धीमी गति आगामी वर्षों में ऋणों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता को बढ़ाएगी। सरकार पर मौजूदा बाजार ऋण का दबाव भी विचारणीय होगा। उपरोक्त तालिका यह भी दर्शाती है कि वर्ष 2009-10 से आगे बाजार ऋणों में बढ़ाव की प्रवृत्ति थी। 2009-10 से 2012-13 के दौरान प्राप्तियों ने तिगुनी वृद्धि दर्शाई। यह राज्य सरकार की बाजार ऋण पर निरंतर निर्भरता को दर्शाती है।

एफ आर बी एम अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन

एफ आर बी एम अधिनियम, 2005 की धारा 4 (द) अनुबंधित करती है कि ऋणों का उपयोग चालू व्ययों के वित्तपोषण में न होकर स्व-पालनीय विकास क्रियाकलापों तथा पूँजीगत परिसम्पत्तियों के सृजन या वृद्धि में होना चाहिए। सरकार को ऋण के प्रत्येक अंश हेतु यह उद्देश्य सूचित करना है कि प्राप्त ऋण का विकास योजनाओं विशेषतया उनमें जो ऊर्जा, सिंचाई, परिवहन और उद्योगों और उनमें भी जो विशेषकर कमजोर वर्गों और पिछड़े क्षेत्रों को लाभान्वित करती है, करना है। वित्त विभाग के अभिलेखों (2008-09 से 2012-13) ने दर्शाया कि सरकार ने उक्त उद्देश्यों हेतु बाजार ऋणों को उठाया जो तालिका 1.27 में दिया गया है:

तालिका-1.27

वर्ष 2008-09 से 2012-13 के दौरान सरकार द्वारा लिए गए बाजार ऋण और पुनर्भुगतान का विवरण (₹ करोड़)

वर्ष	बाजार ऋणों की धनराशि				
	लिया गया	पुनर्भुगतान के उद्देश्य हेतु		पूँजीगत व्यय के उद्देश्य हेतु	
		धनराशि	प्रतिशत	धनराशि	प्रतिशत
2008-09	1010.69	126.46	12.51	884.23	87.49
2009-10	600.00	139.53	23.26	460.47	76.74
2010-11	991.52	102.00	10.29	889.52	89.71
2011-12	1400.00	240.73	17.14	1160.00	82.86
2012-13	1750.00	950.00	54.29	800.00	45.71

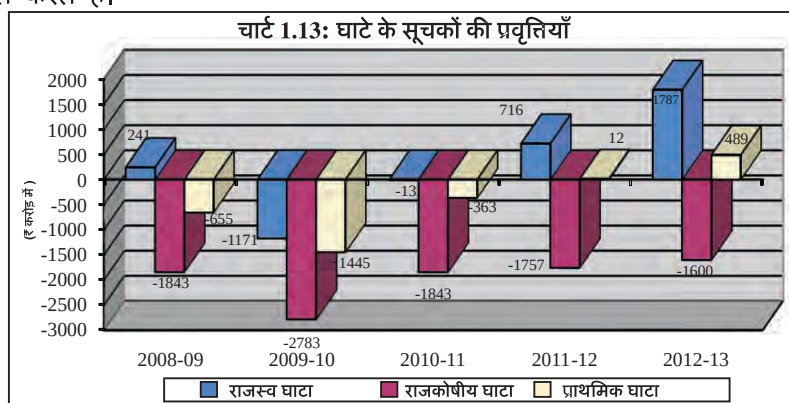
उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि सरकार ने नए ऋणों (2008-09 से 2012-13) के औसतन 24 प्रतिशत का उपयोग परिपक्व बाजार ऋणों के पुनर्भुगतान हेतु किया जबकि औसतन 76 प्रतिशत पूँजीगत व्यय हेतु संदर्भित वर्षों में प्रयोग किया गया। नए ऋणों से परिपक्व बाजार ऋणों का भुगतान इन ऋणों के उद्देश्यों को असफल करने के अतिरिक्त एफ आर बी एम अधिनियम के प्रावधानों के विरुद्ध था।

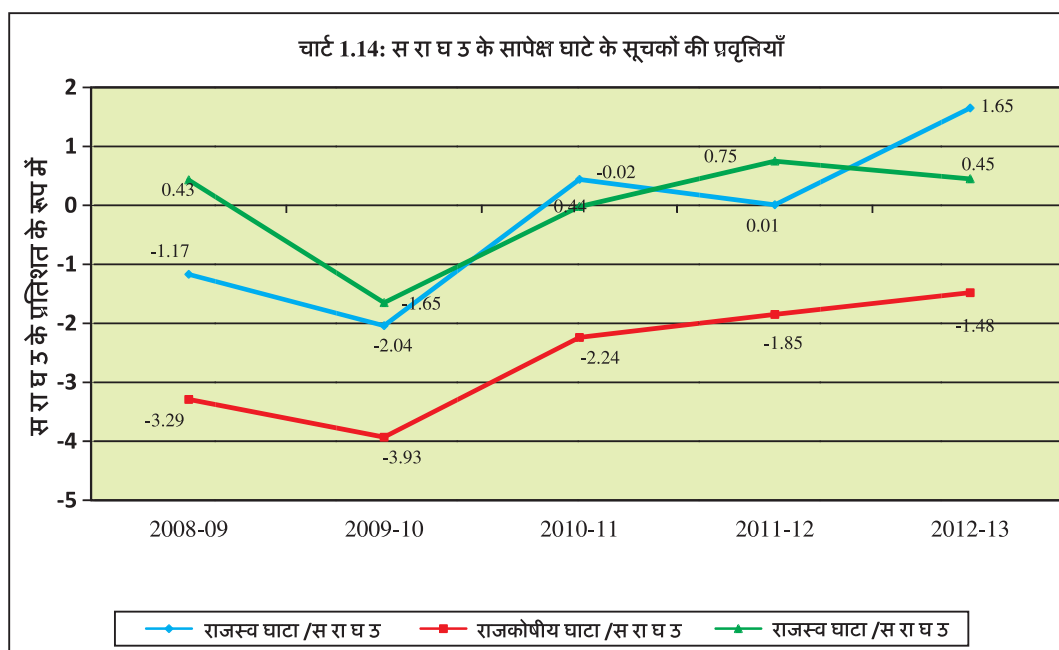
1.11 राजकोषीय असंतुलन

1.11.1 घाटे की प्रवृत्तियाँ

तीन प्रमुख राजकोषीय मापदण्ड-राजस्व, राजकोषीय एवं प्रारम्भिक घाटा-एक विशिष्ट अवधि के दौरान राज्य सरकार के वित्त में राजकोष के समस्त असन्तुलनों की सीमा को इंगित करते हैं। सरकारी लेखे में घाटा इसकी प्राप्ति और व्यय के मध्य के अन्तराल को प्रस्तुत करता है। घाटे की प्रकृति, सरकार के राजकोषीय प्रबन्धन के विवेक का एक सूचक है। पुनः, किस तरह घाटे का वित्त पोषण किया जाता है और जुटाए गये संसाधनों को प्रयुक्त किया जाता है, यही इसके राजकोषीय स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण सूचक है। यह खण्ड, इन घाटों की प्रवृत्तियों, प्रकृति, परिमाण एवं वित्त पोषण के ढंग तथा एफ आर बी एम अधिनियम/नियमों के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2012-13 हेतु निर्धारित किये गये लक्ष्यों के सापेक्ष राजस्व एवं राजकोषीय घाटे के वास्तविक स्तरों के आकलन को भी प्रस्तुत करता है।

चार्ट 1.13 एवं 1.14, 2008-09 से 2012-13 तक की अवधि में घाटे के सूचकों की प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करते हैं।





राज्य ने 2008-09 तक राजस्व आधिक्य का अनुभव किया जो 2009-10 में मुख्यतः छठे केन्द्रीय वेतन आयोग की संस्तुतियों के क्रियान्वयन से घाटे में बदल गया। तथापि राज्य वर्ष 2010-11 के दौरान राजस्व घाटे को लगभग शून्य (₹ 13 करोड़) तक नीचे लाने में और वर्ष 2011-12 के दौरान ₹ 716 करोड़ का आधिक्य प्राप्त करने में कामयाब रहा जो 2012-13 में बढ़कर ₹ 1,787 करोड़ हो गया।

राजकोषीय घाटा वर्ष 2010-11 में कम किया गया और एफ आर बी एम अधिनियम, 2005 में निर्धारित चार प्रतिशत लक्ष्य से नीचे स रा घ उ का 2.19 प्रतिशत था। सरकार के द्वारा राजकोषीय समेकन के लिए किए गए प्रयासों के फलस्वरूप ही 2011-12 और 2012-13 में भी राजकोषीय घाटे में कमी हुई। ₹ 1,600 करोड़ का राजकोषीय घाटा, स रा घ उ के 1.48 प्रतिशत पर वर्तमान रूप में टिका है और इस संदर्भ में तेरहवें वित्त आयोग द्वारा निर्धारित लक्ष्य 3.5 प्रतिशत के अन्तर्गत ही है।

वर्ष 2007-09 तक कुछ नियन्त्रण में रहने वाले प्राथमिक घाटे ने 2009-10 (₹ 1,445 करोड़) में मात्रात्मक उछाल लिया था और वर्ष 2010-11 में नीचे (₹ 363 करोड़) आ गया और वर्ष 2011-12 में धनात्मक हो गया। वर्ष के दौरान भी यह धनात्मक दिशा में रहा और चालू वर्ष के दौरान बढ़कर ₹ 489 करोड़ हो गया।

1.11.2 राजकोषीय घाटे के घटक एवं इसकी वित्त-पोषण पद्धति

राजकोषीय घाटे की वित्त पोषण पद्धति में एक संरचनात्मक बदलाव हुआ जैसा कि तालिका 1.28 में परिलक्षित है।

तालिका-1.28
राजकोषीय घाटे के घटक एवं इसकी वित्त पोषण पद्धति (₹ करोड़ में)

	विवरण	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
राजकोषीय घाटे का विघटन						
1	राजस्व घाटा (-) आधिक्य (+)	(+) 241	(-) 1,171	(-) 13	(+) 716	(+) 1,787
2	पूँजीगत व्यय	(-) 2,016	(-) 1,647	(-) 1,855	(-) 2,317	(-) 3,542
3	निवल ऋण एवं अग्रिम	(-) 68	(+) 35	(+) 25	(-) 156	(+) 155
राजकोषीय घाटे की वित्त-पोषण पद्धति						
1	बाजार ऋण	884	460	890	1,159	800
2	भारत सरकार से ऋण	(-) 19	(-) 5	16	20	6
3	एन एस एस एफ को जारी विशेष प्रतिभूतियाँ	120	672	921	332	505
4	वित्तीय संस्थाओं से ऋण	204	70	182	131	215
5	लघु बचत, भविष्य निधि आदि	531	1,066	870	626	271
6	जमा एवं अग्रिम	61	229	46	33	219
7	उच्च एवं विविध	(-) 331	722	(-) 331	(-) 412	479
8	प्रेषण	(-) 238	(-) 129	(-) 303	(-) 466	(-) 101
9	अन्य	127	(-) 6	242	190	66
10	कुल आधिक्य/घाटा(नकद शेष)	504	(-) 296	(-) 690	144	(-) 860
11	सकल राजकोषीय घाटा	1,843	2,783	1,843	1,757	1,600

स्रोत: उत्तराखण्ड सरकार के वित्त लेख, 2012-13

राजस्व आधिक्य जो कि 2009-10 में राजस्व व्यय में अत्यन्त उछाल के कारण घाटे में बदल गया था, वर्ष 2011-12 के दौरान पुनः आधिक्य में बदल गया और चालू वर्ष के दौरान पुनः ₹ 1,071 करोड़ से बढ़ा और वर्ष 2012-13 के अन्त में ₹ 1,787 करोड़ पर रहा। राजकोषीय घाटा (₹ 1,600 करोड़) बड़ी मात्रा में बाजार की उधारियों (₹ 800 करोड़) और राष्ट्रीय लघु बचत निधि को जारी विशेष प्रतिभूतियों (₹ 505 करोड़) से प्रबन्धित किया गया। यद्यपि, वर्ष के दौरान पूँजीगत व्यय में वृद्धि (52.88 प्रतिशत) हुई, फिर भी राजकोषीय घाटे को तर्कसंगत सीमा अर्थात् स रा घ उ के 3.5 प्रतिशत तक (तेरहवें वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार) चालू वर्ष के दौरान नीचे लाया गया (स रा घ उ का 1.48 प्रतिशत)।

1.11.3 घाटे/आधिक्य की गुणवत्ता

राजकोषीय घाटे के सापेक्ष राजस्व घाटे का अनुपात और प्राथमिक राजस्व घाटा एवं पूँजीगत व्यय (ऋण एवं अग्रिमों सहित), राज्य के वित्त में घाटे की गुणवत्ता के सूचक होंगे। राजकोषीय घाटे के सापेक्ष राजस्व घाटे का अनुपात उस सीमा को इंगित करता है जहाँ तक वर्तमान उपभोग के लिये ऋण निधियों का उपयोग किया गया था। पुनः राजकोषीय घाटे के सापेक्ष राजस्व घाटे का सतत् उच्च अनुपात यह भी दर्शाता है कि राज्य का परिसम्पत्ति आधार निरन्तर कम हो रहा था और ऋणों (राजकोषीय दायित्व) के अंश परिसम्पत्तियों द्वारा समर्थित नहीं थे। प्राथमिक घाटे का विभाजन (तालिका 1.29) उस सीमा को इंगित करेगा जहाँ तक घाटा पूँजीगत व्यय में वृद्धि के कारण रहा है जो राज्य अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता में वृद्धि के लिये वांछनीय हो सकता है।

तालिका-1.29
प्राथमिक घाटा/आधिक्य-संघटकों का विभाजन (₹ करोड़ में)

वर्ष	ऋणोत्तर प्राप्ति*	प्राथमिक राजस्व व्यय	पूँजीगत व्यय	ऋण एवं अग्रिम	कुल प्राथमिक व्यय	प्राथमिक राजस्व घाटा (-) / आधिक्य (+)	प्राथमिक घाटा (-) / आधिक्य (+)
1	2	3	4	5	6 (3+4+5)	7 (2-3)	8 (2-6)
2008-09	8,689	7,206	2,016	122	9,344	(+) 1,483	(-) 655
2009-10	9,551	9,319	1,647	30	10,996	(+)232	(-) 1,445
2010-11	11,693	10,141	1,855	60	12,056	(+) 1,552	(-) 363
2011-12	13,782	11,206	2,317	247	13,770	(+)2,576	(+)12
2012-13	16,175	11,871	3,542	273	15,686	(+)4,304	(+)489

* लोक ऋण प्राप्ति से इतर प्राप्ति अर्थात् ऐसी प्राप्ति जिन्हें वापस नहीं किया जाता है

- ऋणोत्तर प्राप्ति 2008-09 से 2012-13 तक 86.15 प्रतिशत बढ़ी और प्राथमिक राजस्व व्यय को पूरा करने के लिए पर्याप्त थी। तथापि, अन्तराल जो 2009-10 में काफी कम हो गया था, पुनः 2010-11, 2011-12 और 2012-13 में उच्चोन्मुखी प्रवृत्ति दर्शाई।
- कुल प्राथमिक व्यय में 2008-09 की तुलना में 2012-13 के दौरान ₹ 6,342 करोड़ (67.87 प्रतिशत) की वृद्धि हुई, यह वर्ष 2008-09 से 2012-13 की अवधि के दौरान ₹ 4,665 करोड़ (64.74 प्रतिशत) की सीमा तक प्राथमिक राजस्व व्यय की वृद्धि के कारण थी।
- प्राथमिक राजस्व आधिक्य, जिसने 2009-10 में तीव्र उतार दर्शाया, पुनः पिछले तीन वर्षों के दौरान तीव्र उच्चोन्मुखी प्रवृत्ति दर्शाई और वर्ष 2012-13 के दौरान बढ़कर ₹ 4,304 करोड़ हो गया।
- वर्ष 2011-12 के दौरान, प्राथमिक घाटा, ऋणोत्तर प्राप्ति में वृद्धि होने के कारण प्राथमिक आधिक्य में परिवर्तित हुआ और वर्ष 2012-13 के दौरान भी धनात्मक रहा और वर्ष 2012-13 के अंत में बढ़कर ₹ 489 करोड़ हो गया।

1.12 विगत राज्य वित्त पर लेखा परीक्षा प्रतिवेदनों का अनुसरण

उत्तराखण्ड में राज्य वित्त पर किसी भी लेखा परीक्षा प्रतिवेदन पर लोक लेखा समिति (सितम्बर 2013) द्वारा चर्चा नहीं की गई। तदनुसार, प्रतिवेदन के राज्य विधायिका के समक्ष प्रस्तुत करने के पश्चात सरकार द्वारा उठाए गए सुधारात्मक उपायों को लेखा परीक्षा में सुनिश्चित नहीं किया जा सकता।

1.13 निष्कर्ष

चालू वर्ष के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में राजस्व प्राप्ति में ₹ 2,056 करोड़ (15.02 प्रतिशत) की वृद्धि हुई। यह वृद्धि मुख्यतः संघ के करों व शुल्कों में राज्य के अंश (₹ 407 करोड़), राज्य के अपने कर राजस्व (₹ 799 करोड़) और करेतर राजस्व (₹ 467 करोड़) में बढ़ोतरी के कारण थी। राज्य की व्यय पद्धति उदघाटित करती है कि कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में राजस्व व्यय चालू वर्ष में घटा तथा करीब 78.54 प्रतिशत रहा। आयोजनेतर राजस्व व्यय (एन पी आर ई) में विगत वर्ष की तुलना में 8.25 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

वर्ष 2012-13 के दौरान वेतन पर व्यय 49.63 प्रतिशत था और एन पी आर ई के एक बड़े अंश को खपत करने की निरंतरता बनाए रहा। वर्ष 2012-13 में पेंशन भुगतान पर व्यय ₹ 1,366 करोड़ था जो

राजस्व प्राप्ति का 8.67 प्रतिशत था। पेंशन भुगतान, तेरहवें वित्त आयोग द्वारा निर्धारित मानक (₹ 1,329 करोड़) से कुछ अधिक (₹ 37 करोड़) था (तेरहवें वित्त आयोग की प्रतिवेदन का अनुलग्नक 7.7)। राज्य को आयोजनेतर राजस्व व्यय के घटकों को नियंत्रित करने के लिए उपाय ढूँढने चाहिए तथा ब्याज कटौती के लिए आवश्यकता आधारित उधार पर आश्रित रहना चाहिए।

गत वर्ष की तुलना में 2012-13 में राज्य के पूँजीगत व्यय में ₹ 1,225 करोड़ की वृद्धि हुई जो मुख्यतः (i) सामाजिक सेवाओं और (ii) आर्थिक सेवाओं में वृद्धि के कारण थी। कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में पूँजीगत व्यय ने वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 की अवधि में विचलनशील प्रवृत्ति दर्शाई जो वर्ष 2008-09 में 19 प्रतिशत व वर्ष 2012-13 में 20 प्रतिशत था। चालू वर्ष में इसने पिछले वर्ष के सापेक्ष वृद्धि (52.87 प्रतिशत) दर्शाई लेकिन राज्य सरकार द्वारा अपने ब आ (₹ 3,653 करोड़) और एम टी एफ पी एस (₹ 4,547 करोड़) में निर्धारित लक्ष्य से नीचे (₹ 3,542 करोड़) रहा।

विकासपरक पूँजीगत व्यय के अंश ने भी अन्तर्वर्षीय भिन्नता दर्शाई लेकिन वर्ष 2011-12 की तुलना में वर्ष 2012-13 के दौरान बढ़ गया। तथापि समग्र विकासपरक व्यय वर्ष 2008-09 से वर्ष 2012-13 की अवधि के दौरान 69 प्रतिशत बढ़ गया। सांविधिक निगमों, ग्रामीण बैंकों, संयुक्त स्टॉक कम्पनियों तथा सहकारी संस्थाओं में सरकार के निवेश पर पिछले तीन वर्षों में औसत प्रतिफल लगभग नगण्य था जबकि सरकार ने वर्ष 2010-11 से वर्ष 2012-13 के दौरान अपने ऋणों पर औसतन 7.89 प्रतिशत की दर से ब्याज भुगतान किया।

राज्य ने वर्ष 2007-08 से वर्ष 2008-09 तक राजस्व आधिक्य अनुभव किया जो वर्ष 2009-10 में मुख्यतः छठे केन्द्रीय वेतन आयोग की संस्तुतियों के कार्यान्वयन के कारण घाटे में बदल गया तथापि राज्य वर्ष 2010-11 में राजस्व घाटे को लगभग शून्य (₹13 करोड़) तक लाने में कामयाब हो पाया था और वर्ष 2011-12 के दौरान ₹ 716 करोड़ का राजस्व आधिक्य प्राप्त किया जिसमें चालू वर्ष में पुनः सुधार आया और ₹ 1,787 करोड़ पर रहा।

राजकोषीय घाटा को जो कि 2009-10 के दौरान उच्च स्तर पर, स रा घ उ का 3.93 प्रतिशत था, जो 2010-11 और 2011-12 में 3.5 प्रतिशत की तर्कसंगत सीमा तक नीचे लाया गया। 2012-13 के दौरान ₹ 1,600 करोड़ का राज्य का राजकोषीय घाटा स रा घ उ का 1.48 प्रतिशत था, जो राजकोषीय समेकन को दर्शाता है।

वर्ष 2012-13 के अंत में राज्य के रोकड़ शेष में ₹ 860 करोड़ का आधिक्य हुआ और भारतीय रिजर्व बैंक में नकद शेषों के निवेश व भारत सरकार की प्रतिभूतियों में निवेश पर प्राप्त ब्याज नगण्य (1.06 प्रतिशत) था, जबकि सरकार ने 7.89 प्रतिशत की औसत ब्याज दर पर ऋण लिया। तथापि, राज्य निम्नतम नकद शेष बना रख पाया और वर्ष के दौरान ओवरड्राफ्ट सुविधा का सहारा नहीं लिया।

2012-13 में ऋण - स रा घ उ अनुपात, तेरहवें वित्त आयोग द्वारा निर्धारित मानक 40.00 प्रतिशत से काफी नीचे, 23.57 प्रतिशत पर था। राज्य ने वर्ष 2011-12 में प्राथमिक आधिक्य की स्थिति प्राप्त कर ली थी जो चालू वित्तीय वर्ष में पर्याप्त रूप से बढ़ी (₹ 489 करोड़)। 31 मार्च 2013 को लोक ऋण ₹ 18,800 करोड़ है और ऋणों का 50 प्रतिशत सात वर्षों और अधिक की परिपक्वता अवधि में है।

वर्ष 2012-13 के दौरान, ₹ 1,568 करोड़ की एक बड़ी धनराशि सीधे राज्य क्रियान्वयन अभिकरणों को अन्तरित की गयी। तथापि, इन निधियों को राज्य बजट/राजकोष पद्धति के माध्यम से नहीं दिया

गया। जैसे कि यह निधियाँ राज्य बजट के बाहर रहती हैं, इनके उपयोग का अनुश्रवण करने के लिये एक भी अभिकरण नहीं है और तत्काल रूप से उपलब्ध कोई ऐसे आँकड़े नहीं हैं ताकि किसी विशेष वर्ष में प्रमुख चिन्हित योजनाओं एवं अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं में वास्तव में कितना व्यय हुआ है, आँका जाए।

1.14 संस्तुतियाँ

सरकार को चाहिए कि:

- सभी परियोजनाओं को तत्परता से पूरा करने के लिए प्रभावशाली कार्ययोजना तैयार करे ताकि लोग समय पर परिलक्षित लाभ प्राप्त करें;
- निवेश में धन के बेहतर मूल्य सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त उपाय लेने हेतु विचार करे; और
- क्रियान्वयन अभिकरणों को सीधे अन्तरित धनराशि के उपयोग का अनुश्रवण के लिए एक प्रबन्ध सूचना प्रणाली स्थापित करने पर विचार करे।